RNI No. JKHIN/2005/24338

Postal Regd. No. JK-314/16-18

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

हिन्दी मासिक

जम्मू-कश्मीर से प्रकाशित राष्ट्रीय विचारों की एकमात्र पत्रिका

सहयोग राशि ₹ 100/- (वार्षिक)

त्रिकुटा संकल्प

वर्ष 11 अंक 4 चैत्र-बैशाख 2073

युगाब्द 5118 (अप्रैल 2016)

जम्मू कश्मीर के पराक्रमी महापुरुष

वर्ष प्रतिपदा विशेषांक

शक्ति व पवित्रता के ताज पहने, तेज़स्वी शासक के समान सफेद टोप से ढकी बर्फीली चोटियों वाले पर्वतों की ऊँची श्रृंखलाओं को देखिए।
वे ऊपर उठती हैं व ताज धारण किए हुए आगे बढ़ती हैं।
उनकी निरंतर गति को देखिए जो अपने मार्ग में आने वाले छोटे-मोटे विघ्नों से प्रभावित नहीं होतीं।
अथक, वे "बाधा" शब्द ही नहीं जानतीं।

कठुआ–ऊधमपुर–डोडा संसदीय क्षेत्र

सभी देशवासियों को
नव संवत्सर
2073 की
हार्दिक शुभकामनायें

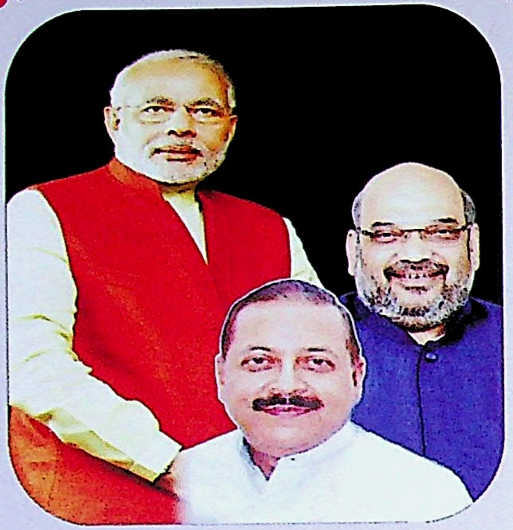

युगाब्द 5118
विश्व के लिए
मंगलमय
हो

संसदीय कार्यालय : 13 स्पेशल गांधीनगर, जम्मू ।

मुख्य उपलब्धियाँ

1. कठुआ में किडिया-गंडयाल पुल ।
2. कंडी बिलावर में जुठाना पुल को मंजूरी ।
3. गाटी, कठुआ में जैव-प्रोद्योगिकी (BIOTECH) पार्क ।
4. सांझी छत, वैष्णो देवी में हाई-टेक मौसम भविष्यवाणी उपकरण ।
5. रियासी ज़िला अस्पताल में मॉडर्न डेंटल सेक्शन ।
6. कठुआ, भद्रवाह और जम्मू के लिए 15 नए एफएम रेडियो चैनल ।
7. Community हाल, देद्गणि (डोडा), मांडली (कठुआ) गलक (कठुआ), कुलिड (किशतवाड़) तथा ऊधमपुर में ।
8. Examination हाल Hr. Sec. स्कूल मच्छेड़ी (कठुआ) में ।
9. जम्मू "युववाणी" रेडियो सेवा बहाल करना ।
10. नवोदय विद्यालय बसोहली एवं डोडा को वाहन MPLADS से ।
11. शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों की MPLADS से सहायता ।
12. यात्री शेड बिंदरबन पोचाल (किश्तवाड़), सरथल देवी जी मन्दिर पास (किशतवाड़) सरकूट दछ्न (किश्तवाड़), लाटी (ऊधमपुर) तथा बसकी नागा डुडु (ऊधमपुर) ।
13. लिंक रोड कदमल से दिशा छात्रावास कटरा ।
14. 0-500 मी. अंतरराष्ट्रीय सीमा पर हर घर को शौचाल्य देने की योजना ।

सम्पर्क अधिकारी **सहसम्पर्क अधिकारी**

सौजन्य से : शक्ति फॉऊडेशन, त्रिकुटा नगर एवं आर्शीवाद बैंकेट हॉल, जानीपुर

भारतीय जनता पार्टी

जम्मू कश्मीर
की ओर से
सम्पूर्ण जगत को
विक्रमी संवत्
2073 बैशाखी
और
नवरात्रे की
शुभकामनायें

सभी देशवासियों को नव संवत्सर 2073 की हार्दिक शुभकामनायें

SVS ADVANTECH ENTERPRISES

Deals in : Central Gas Pipe Line System Monitoring Anaesthesia Equipments

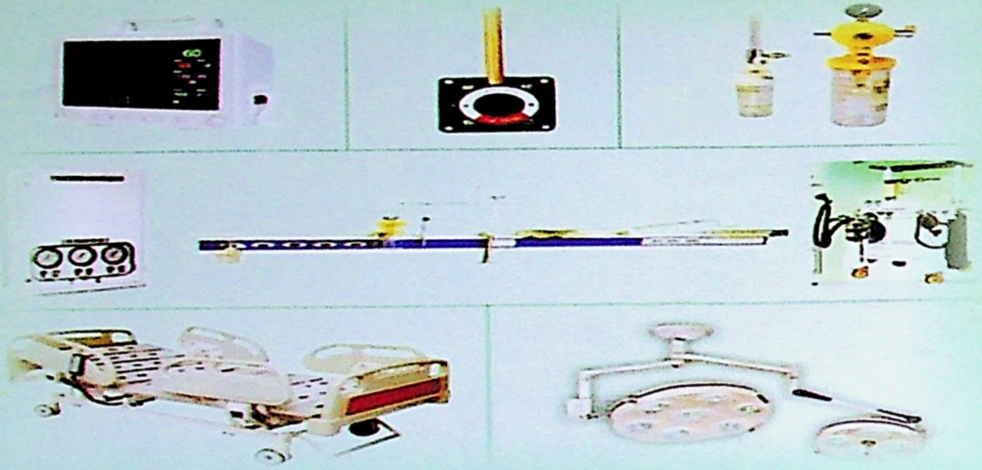

119-Diamond Avenue, Karan Vihar, Majitha Road, Amritsar-143 001
Ph. : 0183-2421200, Fax : 0183-2421200 (M) 98144-14416, 9855244416
E-mail : svsadvantech@gmail.com

भारतीय जनता पार्टी

जिला जम्मू पश्चिम
की ओर से
नव संवत्सर 2073 नवरात्रे और बैसाखी की
हार्दिक शुभकामनायें

अयोध्या गुप्ता
जिला प्रधान

संजीव शर्मा
जिला महासचिव

नव संवत्सर 2073 मंगलमय हो

www.mirajgroup.in

www.f.com/mirajgroup

Head Office
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301
EPBX: +91-2953-230622, 232522
Fax: +91-2953-233622

MIRAJ GROUP
आपका विश्वास ही हमारी पहचान

Udaipur Office
Miraj House, Panchwati, Udaipur - 313 001
EPBX: +91-294-2528435/37
Fax: +91-294-2528436

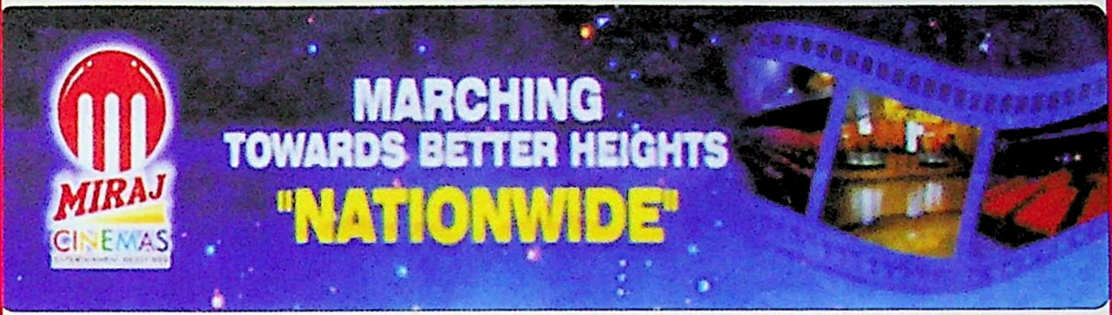

FMCG | PRINTING, STATIONERY & PACKAGING

HANS RAJ VED PARKASH

PACCA DANGA, JAMMU. Ph. : 0191-2546916

Reg. No. :- J/NHCE/2006-07/157

Raina Diagnostic Laboratory

RDL

(A UNIT OF RAINA DIAGNOSTIC CENTRE)
Talab Tillo Bohri Patta,
Opp. State Bank of India, Jammu-180002

की ओर से विक्रमी संवत् 2073 की शुभकामनायें

Timing :
7 a.m. to 7 p.m. (Mon. to Sat.)
Sunday 7 a.m. to 2 p.m.
(Even Closed)

Lab. 0191-2555526
Mob. 94198 - 76604
E-mail : rainadiab@gmail.com

C/C

- Dr. Lal path. Labs. Pvt. Ltd., New Delhi.
- S.R.L. Ranbaxy Ltd. Mumbai.
- Thyrocare Technologies Ltd. Mumbai.

SPECIAL TESTS :- T_3, T_4, TSH, TORCH, TB-Elisa, PSA, ANA, Hiv-Westeron blot, FSH, LH, PROLACTIN, TESTOESTERONE (Free and Total), SERUM IRON, TIBC, VIT-D, VIT-B12, GGT, H-PYLORI, HLAB-27, CEA etc.

Ph. : 0191-2452824
(M) : 94191-41623
E-mail : leatherlink2@gmail.com

Rajeev Langer

Leather Link

A House of Family Footwear & Accessories

Wishes you all very happy and prosperous Vikram Samvat 2073

574-A, NEAR GURUDWARA CHOWK, GANDHI NAGAR, JAMMU.

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ नं.
1.	राजा जाम्बू लोचन	4
2.	वर्ष प्रतिपदा	5
3.	अभिनव गुप्त	6
4.	बाबा जित्तो	9
5.	महाराजा गुलाब सिंह	10
6.	जोरावर सिंह	11
7.	मियां डीडो	12
8.	महाराजा हरि सिंह	15
9.	देवी दित्ता	16
10.	बलिदानी रामचन्द्र	17
11.	सम्राट ललितादित्य	18
12.	अ.भा.प्र. सभा प्रस्ताव	21–23
13.	बन्दा बहादुर	24
14.	लाला हंसराज महाजन	25
15.	मेहर चन्द महाजन	26
16.	ब्रि. राजेन्द्र सिंह	27
17.	पं. प्रेमनाथ डोगरा	28
18.	पदमश्री डा.जितेन्द्र उधमपुरी	29
19.	वेद प्रकाश चड्डा	30
20.	कैप्टन राम प्रकाश	31
21.	महाकवि अवतार	32
22.	मेजर सोमनाथ शर्मा	33
23.	ललद्यद	34

संपादक – श्री देवेन्द्र कुमार
सह–संपादक – श्री बलवान सिंह

संपादकीय मंडल :
- श्री रमेश चन्द्र
- डा. सत्यदेव
- डॉ. नीलम सरीन
- श्री गोपाल कृष्ण

प्रबन्धक – श्री प्रेम कुमार

कार्यालय : कमरा नं. 12, गीता भवन, परेड, जम्मू–180001
दूरभाष : 0191–2565483, 9419143528

वैधानिक सूचना :– त्रिकुटा संकल्प में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का निपटारा प्रकाशन के तीन महीने के अंदर जम्मू न्यायालय में ही होगा।

डोगरी गीत

–यशपाल निर्मल

डोगरें दी वीरता दा मान डोगरी।
सच्च पुच्छो साढ़ी ऐ पनछान डोगरी।।

पंलेआ मठोआ तेरै अंगन पसार।
तेरे कोला थ्होआ सारी दुनिया दा प्यार।।
हड्ड मास साढ़ी जिंद जान डोगरी।
डोगरें दी वीरता दा मान डोगरी।
सच्च पुच्छो साढ़ी ऐ पनछान डोगरी।।

तेरे कन्नै प्हाड़ें दा शंगार डोगरी।
तेरे कन्नै सोभदी ऐ ब्हार डोगरी।।
कोयलै बी लाई मिट्ठी तान डोगरी।
डोगरें दी वीरता दा मान डोगरी।
सच्च पुच्छो साढ़ी ऐ पनछान डोगरी।।

तुऐं मिगी दित्ती पनछान डोगरी।
ज़िंदगी च बस्सी बनी प्राण डोगरी।।
साढ़ा ख़ान पान ते ऐ लान डोगरी।
डोगरें दी वीरता दा मान डोगरी।
सच्च पुच्छो साढ़ी ऐ पनछान डोगरी।।

माऊ दी ऐ मिट्ठड़ी जवान डोगरी।
बच्चे कैह्सी बोलदे त्राह्‌ड डोगरी।।
घरै च बनी अनजान डोगरी।
डोगरें दी वीरता दा मान डोगरी।
सच्च पुच्छो साढ़ी ऐ पनछान डोगरी।।

आओ गास डोगरी दा झंडा चाढ़चौ ।
उच्चड़े संघासनै प इसी ब्हालचौ।।
करी सकै पुत्तरें प मान डोगरी।
डोगरें दी वीरता दा मान डोगरी।
सच्च पुच्छो साढ़ी ऐ पनछान डोगरी।।

डोगरें दी वीरता दा मान डोगरी।
सच्च पुच्छो साढ़ी ऐ पनछान डोगरी।।

राजा जाम्बू लोचन

जम्बू जनपद तथा जाम्बू नगर के संस्थापक राजा जाम्बू लोचन एक महान योद्धा, नीतिवान तथा जम्मू के प्रसिद्ध शासक हुए हैं। इनका जन्म जम्मू तवी नगर से सटी तवी नदी के पूर्वी छोर पर बसी बाहू जनपद की राजधानी अंगदिया पुरी में यहां के राजा रघुवंशी अग्निगरभ के घर लगभग छटी शताब्दी कलीयुग अर्थात ई. पू. 2500 में हुआ। अंगदियापुरी बाहूदुर्ग और नरवाल हनुमान मंदिर के बीच में थी। अयोध्या के चक्रवर्ती सम्राट महाराजा रघु की तेहरवीं पीढ़ी में बाहुलोचन व जाम्बूलोचन का जन्म हुआ। पिता अग्निगरभ की मृत्यु पश्चात् उनका बड़ा पुत्र बाहुलोचन राजगद्दी पर बैठा। बाहू नगर से 52 कि.मी. पूर्व में प्राचीन काल में एक वेदपुरी नामक नगर था। कुछ समय पश्चात् यहां पर शिवी पुत्र महापराक्रमी मुदक ने एक बड़े जनपद की स्थापना की तथा इन्होंने अपने नाम पर इस जनपद का नाम मद्रजनपद तथा वेद पुरी का नाम मद्रनगरी रखा, यहाँ इन्होंने अपनी राजधानी बनाई। इतिहासकारों के अनुसार लक्ष्मण ने त्रेतायुग के अंत में मद्रजनपद पर आक्रमण किया तथा मद्रजनपद के मध्य में बाहू जनपद की स्थापना की। तब से लेकर जाम्बू लोचन के समय तक मद्र और बाहूजन पद के बीच युद्ध होते रहते थे।

राजा जाम्बूलोचन ने जम्बू के गहन वन में एक तलाई में शेर और बकरी को एक ही घाट पर जिसे डोगरी भाषा में पत्तन कहते हैं, पानी पीते देखा। दोनों ने पानी पिया और वापिस चले गये। यह देख कर राजा को अचम्भा लगा और यहां पर अपनी राजधानी अपने नाम पर बसाने का फैसला किया। इस स्थान पर अब एक पार्क बना है, राजा जाम्बू लोचन, शेर और बकरी का यह पार्क रणवीरेश्वर मंदिर के पास है।

बाहू लोचन के राजा बनते ही फिर युद्ध शुरू हो गया। जब चन्द्रहास वहाँ का राजा बना तो शल्य कोट के राजा से भारी युद्ध छिड़ गया तथा बाहू लोचन अपनी भारी सेना समेत मारा गया। बाहूलोचन की कोई संतान न होने के कारण जाम्बू लोचन गद्दी पर बैठा तथा शल्यकोट पर भारी दल बल के साथ भाई की मृत्यु का बदला लेने हेतु आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में चन्द्रहास राजा लगभग पराजित हो गया था, परन्तु बुद्धिजीवियों व ऋषि मुनियों ने हस्तक्षेप कर युद्ध समाप्त करवा कर आपस में शांति की संधि करवा दी। जाम्बूलोचन का विवाह मद्रराज शल्यकोट की राजकुमारी शल्यवती से हो गया था। मद्रराज ने जाम्बूलोचन के जाम्बूजनपद को मान्यता प्रदान कर दी। नदी दोनों जनपदों मद्रजनपद तथा जम्बू जनपद के बीच पक्की सीमा बन गई और जाम्बू नगर की भी स्थापना हो गई जो राजा जाम्बू लोचन ने अपने नाम पर की।

एक और तथ्य के अनुसार इसी समय के आस पास राजा जाम्बूलोचन ने जम्बू के गहन वन में एक तलाई में शेर और बकरी को एक ही घाट पर, जिसे डोगरी भाषा में पत्तन कहते हैं, पानी पीते देखा। दोनों ने पानी पिया और वापिस चले गये। यह देख कर राजा को अचम्भा लगा और यहां पर अपनी राजधानी अपने नाम पर बसाने का फैसला किया। इस स्थान पर अब एक पार्क बना है, राजा जाम्बू लोचन, शेर और बकरी का यह पार्क रणवीरेश्वर मंदिर के पास है। शक्ति माता बाहू को अब भी अयोध्या देवी कहते हैं। यहां के पुरोहित भी अपने पूवर्जों को अयोध्या से ही आया हुआ मानते हैं। इसी प्रकार डोगरा सेना का नाम 1948 तक रघु प्रताप सेना था तथा डोगरा सेना का ट्रैनिंग सेंटर आज तक अयोध्या में ही है। ■■■

—मंगलदास पंगोतरा

वर्ष प्रतिपदा

–अशोक कुमार बेरी

भारतीय कालगणना के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि अर्थात् प्रतिपदा से नव संवत्सर का आरंभ होता है। इसी तिथि को वर्ष प्रतिपदा कहते हैं। भारत वर्ष में युधिष्ठिर संवत, विक्रम संवत, शालिवाहन शक संवत आदि का प्रारंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है। शासकीय दृष्टि से शक संवत को मान्यता है, परंतु जन जीवन में विक्रम संवत को प्रमुखता दी गई है। ऋतुओं के पूरे एक चक्र को संवत्सर कहते हैं। चैत्र मास के प्रथम सूर्योदय पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी। इस तिथि के कई ऐतिहासिक महत्व भी हैं। इस वर्ष से 1 अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 115 वर्ष पहले वर्ष प्रतिपदा के दिन ही ब्रह्मा जी ने सृष्टि का सृजन किया था। इसी दिन सम्राट विक्रमादित्य ने विक्रम संवत प्रारंभ किया, शालिवाहन ने शालिवाहन संवत्सर प्रारंभ किया, स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की, सिंध प्रांत के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरुणावतार संत झूलेलाल प्रगट हुए, युधिष्ठिर राज्याभिषेक के अवसर पर युगाब्द संवत्सर प्रारंभ हुआ, प्रभु श्रीराम का राज्याभिषेक इसी अवसर पर हुआ, देश की एकता, अखंडता एवं एकात्मता के संरक्षण के लिये सक्रिय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी इसी दिन हुआ, शालिवाहन नामक कुम्हार के लड़के ने मिट्टी के सैनिकों की सेना बनाई। उस पर पानी छिड़ककर सजीव बनाया और प्रभावी शत्रुओं को परास्त किया। यह एक लाक्षणिक विषय है। वास्तव में बिल्कुल चैतन्यहीन, पौरुषहीन, पराक्रमहीन, बने समाज में चैतन्य भर दिया था। जिससे विजयी हुए। सोते हुए समाज के कानों में सांस्कृतिक शंख ध्वनि फूंकने की और मृत मानव के शरीर में जीवन संचार करने के लिये आज भी ऐसे शालिवाहनों की आवश्यकता है। समुद्र लांघने के समय सिर पर हाथ रखकर बैठे हनुमान को आवश्यकता है, पीठ पर हाथ रखकर विश्वास देने वाले जामवंत की। शस्त्र त्याग कर बैठे अर्जुन को आवश्यकता है, उत्साह प्रेरक मार्गदर्शक कृष्ण की। संस्कृति के सपूत और गीता के युवकों का सत्कार करने के लिये आज का समाज भी तैयार है।

कैसे मनाएं यह नव संवत्सर महोत्सव :–

■ इस दिन प्रथम नवरात्र भी होता है, अतः उपवास रखें

■ स्नान के पश्चात घर के सभी सदस्य मिलकर यज्ञ करें, नए वर्ष के लिये किसी आदत को छोड़ने की तथा किसी नयी अच्छी आदत को सीखने का संकल्प करें।

■ फिर किसी मंदिर में परिवार सहित जाकर पूजन करना चाहिये।

■ कथा कीर्तन का आयोजन हो सकता है।

■ सम्राट विक्रमादित्य, अन्य महापुरुषों की कथायें सुनाई जा सकती हैं । इसी दिन संत झूलेलाल, गौतम जयंती भी होती है, डॉ. हेडगेवार जयंती भी इसी दिन है।

सम्राट विक्रमादित्य ने शकों पर विजय के पश्चात विक्रमी संवत शुरू किया था। शास्त्र के अनुसार संवत प्रारंभ करने से पूर्व उक्त सम्राट का यह दायित्व होता था कि उसके राज्य में कोई दुखी–दीन न हो। कोई कर्जदार न हो। राजा सबके कर्ज चुका दे, सबके दुःख दूर कर दे। वही राजा अपने नाम से संवत शुरू कर सकता है। सम्राट वीर विक्रमादित्य ने भी न्याय और वीरता का मानदण्ड स्थापित किया था। ■

अभिनव गुप्त

–प्रदीप कौल

दशमी शताब्दी में भारत के कश्मीर क्षेत्र में एक ज्योतिष्मान तारे का उदय हुआ जिसने न सिर्फ भारत में अपितु सारे विश्व में भारतीय शैव सिद्धांत का प्रचंड प्रतिपादन किया। अभिनव, जिसको आज सारा जगत अभिनवगुप्त के नाम से जानता है, ने कश्मीर की इस असीम धरोहर पर अपनी प्रतिभा के मणि जड़ दिए। आचार्य अभिनवगुप्त का जन्म 940 ई के आसपास माना जाता है। यह कालखण्ड भारत और कश्मीर के इतिहास का एक संघर्ष काल था। कट्टर इस्लामी ताकतें भारत के उत्तर–पश्चिम क्षेत्र पर अपनी दस्तक दे रही थीं। इस परवेश में आचार्य अभिनवगुप्त पाद का प्रादुर्भाव हुआ। इनकी विलक्षण प्रतिभा ने सारे तंत्र दर्शन को समेट दिया। जिन मौलिक कृतियों का आचार्यपाद ने निर्माण किया, उन्होंने भारतीय दर्शन और काव्य शास्त्र को एक अलग स्तर पर खड़ा कर दिया। आज सारे विश्व में जो दिलचस्पी अभिनवगुप्त में दिखाई जा रही है उसका मूल कारण यही है। इन्होंने अद्वैत शैव दर्शन, काव्य शास्त्र एवं नाटय शास्त्र में जो नए आयाम जोड़े वे आज सारे विश्व को अभिभूत कर रहे हैं। अभिनव स्वयं कहते हैं कि उन्होंने अपने पिता नरसिंहगुप्त के अतिरिक्त कश्मीर के प्रसिद्ध विद्वानों और गुरुजनों से दीक्षा ली। अपने पिता से व्याकरण, वैनानाथ से द्वैताद्वैत तंत्रों, भूतिराज से ब्रह्मवद्या, लक्ष्मणगुप्त से प्रतिभिज्ञा दर्शन, इन्दुराज से काव्यालंकार और भट्टतोत से नाट्य शास्त्र का ज्ञान अर्जित किया। इसके अतिरिक्त भारत के विख्यात तंत्र साधक आचार्य श्री शंभूनाथ जो जलंदर पीठ के संत थे, उनसे तंत्र साधना एवं उपासना पद्धति की दीक्षा ली। वे आचार्य शंभूनाथ को अपना आध्यात्मिक गुरु मानते हैं। इन्दुराज को साहित्यक गुरु स्वीकार करते हैं।

कश्मीर का यह राजनैतिक परिवेष था जिसमें इस्लामी ताकतों का मुंह तोड़ जवाब देने के लिए यहां के राजा तत्पर थे। दूसरी ओर कश्मीर के महान कवि, विचारक, व्याकरणाचार्य भारत की संस्कृति को व्यापक और बहु आयामी बनाने में व्यस्त थे।

जिन अति महत्वपूर्ण ग्रंथों की उन्होंने रचना की उनमें मुख्यता परात्रिंशिका विवरण, प्रतिभिज्ञा विर्मषणी, तंत्रासार, तंत्रालोक, परमार्थसार और भगवदगीता पर एक अनुपम टीका गीतासंग्रह शामिल है। यह सारे ग्रंथ आध्यात्मिक या दार्शनिक हैं। परन्तु वे विश्व साहित्य जगत में दो अति महत्वपूर्ण टीकाओं से प्रसिद्ध हैं। भरतमुणि के नाटयशास्त्र पर उन्होंने अभिनव भारती नामक टीका लिखी जो विश्व नाट्यशास्त्र पर एक मौलिक कृति मानी जाती है। इसी प्रकार काव्यशास्त्र में आन्दवर्धन की विख्यात कृति ध्वन्यालोक पर लोचन नामक टीका लिखकर भारतीय काव्यशास्त्र पर विस्तृत प्रकाश डाला। अभिनव गुप्त एक उच्चतम कोटि के विचारक और तत्वज्ञाता ही नहीं थे बल्कि वे एक महान शैव भक्त और तंत्र साधना के ज्योति स्तंभ थे। शिव में उनकी प्रगाड़ भक्ति थी। कहा जाता है कि भैरव स्तोत्र की रचना के बाद वे 1200 शिष्यों के साथ इसी का पाठ करते करते बडगाम के निकट बीरवा (कश्मीर) के समीप एक गुफा में चले गए और इसी गुफा में 4 जनवरी 1016 को शिवधाम में लीन हुए। यह गुफा भैरव गुफा के नाम से आज भी विद्यमान है। ■■■

Dr. Yudhister Vir Gupta & Anita Gupta
wishes all a happy & prosperious
Nav Samvatsar 2073

SUVIDHA

MOTHER & CHILD NURSING HOME

5, Garden Avenue Talab Tillo Road
P.O. Vinayak bazar Jammu - 180016
Ph. : 2555965, 2555830

Facilities Available :

- All major and minor Gynaecological & Obstetrical Surgery
- Indoor Facility for Medicine, Paediatric & Surgery
- Cancer Screening
- Adolescent Care
- Fetograph (Electronic Foetal Heart rate & Uterine Activity Monitor)
- General Surgery
- Laparoscopic Surgery including Harmonic Scalpal
- Ventilator
- Neonates & Children - Incubator, Phototherapy, Exchange transfusions, indoor child care
- Color Dopplar Ultrasound for scientific management of high risk obstetric patients
- E.C.G.
- Infertility work up & Semen Bank, IUI
- Laboratory, Chemist Shop & Canteen.

नव संवत्सर 2073 की हार्दिक शुभ कामनायें

K.K RESORTS

RESTAURANT

ADJOINT AC ROOMS
PATTA BOHRI, TALAB TILLO, JAMMU
PH. : 2106040, 94192-20696

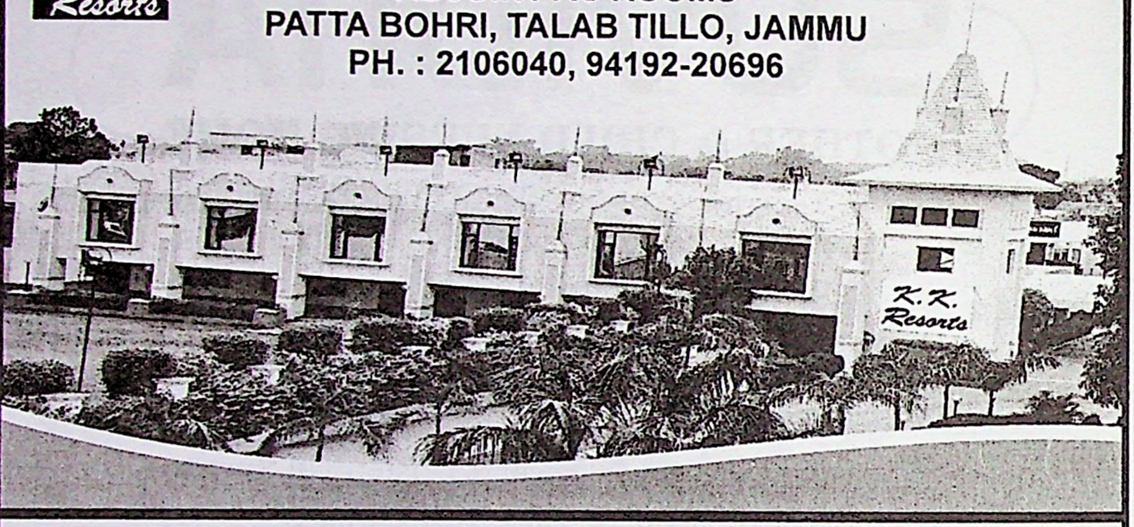

विक्रमी नववर्ष 2073 मंगलमय हो

GALL BLADDER SURGERY (LAPROSCOPICALLY)

MaxxLyfe HOSPITAL

NEAR BATHINDI MORH, SUNJWAN ROAD, JAMMU

JUST FOR ₹ 14999/-

BY RENOWED SURGEON'S FROM JAMMU & DELHI

FOR REGISTRATION CONTACT MOB: 9419186541, 9697261916

बाबा जित्तो

बाबा जित्तो इस पावन धरती के प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने जमादारों/शासनकर्ताओं के अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठाई। जब उन्हें अपने परिश्रम से उगाई गई फसल का न्यायोचित भाग न मिला तो उन्होंने इस के विरूद्ध आवाज़ उठाते हुए कहा कि यह सरासर अन्याय और इकरारनामे के विरूद्ध है। परन्तु निर्दयी जमींदार बीर सिंह ने एक न सुनी और उसने अपने आदमियों को फसल का तीन चौथाई भाग उठाने का आदेश दिया जबकि वह इकरारनामे के अनुसार केवल एक चौथाई भाग लेने के हकदार थे। निकटवर्ती गाँव से काफी लोग यह सब देखने के लिए एकत्रित हो गये। परन्तु किसी ने भी जमींदार के इस दुसाहस को रोकने का प्रयास न किया। क्योंकि सभी लोग जमींदार व राजा के आदमियों से भय खाते थे।

जब जित्तो ने यह देखा कि उसकी सहायता के लिए कोई आगे नहीं आ रहा है और न ही राजा के आदमियों के इस कुकर्म को रोकने की हिम्मत जुटा रहा है और उसकी दिन रात की कड़ी मेहनत बेकार जा रही है। उसे यह सब देख कर सहन न हुआ और क्रोध में अपनी कटार निकाली और बीर सिंह जमींदार को कहा कि–

"यह मेरे खून–पसीने की कमाई है, तू लालची बन गया है और अधर्म के रास्ते पर चल पड़ा है। इसलिए तुझे इस फसल के साथ मेरा माँस भी खाना पड़ेगा।"

उन्होंने यह कह कर भगवान का नाम लिया और पलक झपकते ही फसल के ढेर पर चढ़ कर कटार से अपने आप को शहीद कर दिया और सारा अनाज उन के खूंन से रंग गया। उनकी लाडली बेटी (बुआ कोड़ी) को जब पता चला तो वह भी अपने बापू (जित्तो) के साथ चिता पर सती हो गई। जित्तो के कुर्बान होते ही भयानक तूफान चलने लगा। दाने बिखर कर दूर–दूर तक गिरे। अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठाने वाले जित्तो को इस के बाद सभी लोग उन्हें देव स्वरुप बाबा जित्तो के नाम से मानने लगे। आज भी उन्हें बड़े आदर व श्रद्धा से याद किया जाता है। जिनको अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने हेतु हज़ारों श्रद्धालु हर वर्ष इस स्थान पर इक्टठे होते हैं।

ऐसी भी मान्यता है कि जित्तो की फसल के दाने खाने वाले लोगों व पशु–पक्षियों को बाबा का कर्ज उतारने हेतु इस विशेष स्थान पर हर वर्ष हाजरी देनी पड़ती है। झिड़ी का मेला उसी का पूरक है। देश के विभिन्न राज्यों के श्रद्धालु भी यहाँ पूवर्जों की गलतियों को माफ करवाने व अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु इस स्थान पर हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर आयोजित एक विशाल मेले में भाग लेते हैं जो अब एक तीर्थ स्थान के रूप में परिवर्तित हो चुका है। ■■■

Indu Bhushan Sharma

Senior BJP Leader
Member State working Commettee &
Member All India Handloom Board
congratulate all Jamuties on the eve of
Hindu Nav Varsh Vikrami Samvat 2073

महाराजा गुलाब सिंह

Maharaja Gulab Singh

गुलाब सिंह डुग्गर का पहला ऐसा शासक था जिसने रावी नदी से लेकर जेहलम नदी के मध्य स्थित छोटे–छोटे अनेक राज्यों को जीत कर डुग्गर प्रदेश को न केवल एक सूत्र में बांधा अपितु कश्मीर और लद्धाख तक अपने राज्य का विस्तार किया। संभवता यही एक कारण है कि इतिहाकारों ने उनकी परिगणना महान् योद्धाओं के अंतर्गत की है।

डुग्गर के इस प्रतापी राजा का जन्म 21 अक्तूबर 1792 में मियां किशोर सिंह के घर हुआ। गुलाब सिंह की माता का नाम महादेवी था। गुलाब सिंह का बचपन अपने दादा मियां जवाहर सिंह के संरक्षण में दयावन में बीता। दादा ने ही उसे सैनिक–शिक्षा का प्रशिक्षण दिया और घुड़सवारी, तलवार, तीर और नेजा चलाना सिखाया। किशोर अवस्था में वह एक कुशल सैनिक बन गया। गुलाब सिंह किशोरावस्था में अपने पिता मियां किशोर सिंह के पास रहने के लिए आया तो वहाँ उस की भेंट महात्मा प्रेमदास से हुई। महात्मा प्रेमदास ने गुलाब सिंह को न केवल राजनीति की ही शिक्षा दी अपितु उसे डुग्गर प्रदेश में एक सुदृढ़ और शक्तिशाली राज्य की स्थापना करने की प्रेरणा भी दी।

उन दिनों जम्मू में राजनीतिक स्थिती बड़ी डांवाडोल थी। जम्मू का राजा जीत सिंह बड़ा ही दुर्वल और भीरू था। मियां मोटा उस का मुख्य सलाहकार था और वही जम्मू का प्रशासन चलाता था। जम्मू की जम्वाल बिरादरी में उसका अच्छा दबदबा था। राजा जीत सिंह को निकम्मा समझ कर महाराजा रंजीत सिंह (जिन्होंने खालसा राज्य की स्थापना की) ने अपने छोटे भाई हाकम सिंह और सेनानायक दीवान चंद को सन् 1808 में जम्मू पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया। खालसा सेना जम्मू के निकट आ गई और उसने जम्मू पर आक्रमण किया जिसमें गुलाब सिंह और मियां डीडो ने अपनी वीरता और शौर्य का जिस ढंग से प्रदर्शन किया उससे खालसा सेना भयभीत होकर लड़ाई के मैदान से भाग गई। किन्तु बाद में जम्मू के राजा ने महाराजा रंजीत सिंह से संधि की और उसे वार्षिक नजराना देना मान लिया। मिंया डीडो को संधि की शर्तें पसंद नहीं आई, अतः वह जम्मू के राजा से अलग हो गया। किन्तु गुलाब सिंह ने रणजीत सिंह की सेना में भर्ती होने में जम्मू व डुग्गर प्रदेश की भलाई समझी। खालसा सेना में प्रवेश लेने के बाद गुलाब सिंह ने अपनी वीरता का कई बार प्रदर्शन किया। इससे महाराजा रंजीत सिंह उस पर बहुत प्रसन्न हुए और उसे 1809 ई. में अपनी एक रेजीमैंट का कमांडर बना दिया।

गुलाब सिंह ने महाराजा रणजीत सिंह द्वारा आयोजित विजय अभियानों में बढ़–चढ़ कर भाग लिया। उसने 1815 से लेकर 1820 तक खालसा सेना का कई–युद्ध मोर्चों में नेतृत्व किया। गुलाब सिंह ने मुल्तान का दुर्ग जीतने में जिस अदम्य साहस का परिचय दिया उससे न केवल खालसा सेना के उच्च–अधिकारी अपितु महाराजा रंजीत सिंह भी अत्याधिक प्रभावित हुए।

गुलाब सिंह ने अपनी युद्ध कुशलता से कई लड़ाईयों का नेतृत्व कर काफी रजवाड़ों को महाराजा रणजीत सिंह की अधीनता स्वीकार करने पर विवश कर दिया, परिणामस्वरूप महाराजा ने 17 जून 1822 को गुलाब सिंह को राजा की उपाधि देकर जम्मू का राज्य प्रदान किया और उन्हें अपनी सेना रखने का अधिकार भी दे दिया।

जोरावर सिंह

जोरावर सिंह गुलाब सिंह का विश्वासपात्र था। वह अद्वितीय योद्धा, अदम्य उत्साही, साहसी और बहुत ही महत्वाकांशी था। युवा अवस्था में ही वह लाहौर आया और महाराजा रंजीत सिंह की सेना मे भर्ती हो गया। वहाँ वह कुछ ही समय रहा। बाद में उसने खालसा सेना की नौकरी छोड़ दी और जम्मू आ गया। जम्मू में उसकी भेंट गुलाब सिंह से हुई। गुलाब सिंह ने उसे अपनी सेना में भर्ती करके रियासी भेजा। वहां उसने बहुत ही अच्छा काम किया। उसने भीमगढ़ दुर्ग को विद्रोहियों से बचाया। सेना में राशन की अनियमिताओं को दूर करके पैसों की बचत की। गुलाब सिंह ने उस पर प्रसन्न होकर 1820 में उसे ''भार बरदारी'' विभाग का निरीक्षक नियुक्त किया। 1821 में गुलाब सिंह ने किश्तवाड़ पर अधिकार करने के बाद 1823 में जोरावर सिंह को इस क्षेत्र का प्रशासक नियुक्त किया।

जोरावर सिंह एक महान सेना नायक था। वह पहला भारतीय सेनापति था जिसने भारत की सीमा को मान सरोवर तक बढ़ाया। उसने हिमालय पहाड़ में स्थित पहाड़ी राज्यों को भोगोलिक दृष्टि से जोड़ा और देश के भूगोल को ही बदल कर रख दिया। कई इतिहासकार उसकी तुलना नेपोलियन से करते है। किन्तु वह एक बेजोड़ सेनापति था।

किश्तवाड़ की सीमा लद्धाख राज्य को स्पर्श करती थी अतः किश्तवाड़ में रहते हुए जोरावर सिंह को सूचना मिली कि लद्धाख के दरबार के कुछ लोग वहां के राजा शेषपाल नामग्याल से नाराज हैं। राज परिवार भी धड़ों में विभाजित है, जिसके कारण लद्धाख में अशांति है। जोरावार सिंह ने लद्धाख की स्थिति के बारे में गुलाब सिंह को सूचित किया और लद्धाख पर आक्रमण करने की अनुमति मांगी और गुलाब सिंह ने अनुमति दे दी।

जुलाई 1834 को जोरावर सिंह ने अपने साथ पांच हजार डोगरा सैनिको का एक दल लिया और लद्धाख पर आक्रमण करने के लिए प्रस्थान किया। डोगरा सेना सुरू घाटी को पार करके लद्धाख की सीमा में जैसे ही प्रविष्ट हुई, दोरजी नामग्याल के नेतृत्व में इसका सामना करने के लिए लद्धाखी फौज भी पहुंच गई और दोनों सेनाओं के मध्य 16 अगस्त 1834 को ब्रोतो स्थान पर भयंकर लड़ाई हुई जिसमें लद्धाखी सेना परास्त होकर भाग गई।

उसके बाद जोरावर सिंह ने पुरिंग प्रांत के साकू कार्त्से, सुरू, और शागकार के दुर्गो पर अधिकार किया। उसके बाद वह आगे बढ़ा और उसने सोड़ और पशकुन नगरों पर अधिकार कर लिया। यहाँ से उसने लद्धाख के राजा को संदेश भेजा। किन्तु अंततः युद्ध ही हुआ और लद्धाख के राजा ने पराजय स्वीकार कर ली। इस लड़ाई के बाद जोरावर सिंह और लद्धाख के राजा के मध्य एक संधि हुई। संधि के अंर्तगत लद्धाख के राजा ने जम्मू के राजा की अधीनता स्वीकार की। उसने पचास हजार रूपये लड़ाई का हरजाना और 20 हजार रूपये वार्षिक नजराना देना मान लिया। इस संधि के बाद डोगरा सेना वापस लौट आई। डोगरा सेना के लौटने के तुरंत बाद लद्धाख के लोगो ने विद्रोह का झंडा बुलंद कर दिया। जोरावर को जैसे ही विद्रोह का पता चला वह पाडर के मार्ग से लेह पहुंच कर विद्रोहियों को दंडित किया और तिब्बत की ओर कूच किया।

अंत में 12 दिसम्बर 1841 को तिब्बतियों की सेना के साथ युद्ध में इन्होंने वीर गति प्राप्त की। इस प्रकार जोरावर सिंह ने भारत की विजय पताका भारत से बाहर तिब्बत तक पहुंचायी। ■■■

मियां डीडो

डीडो जम्बाल राजपूत था। यह भी राजवंश का ही एक सदस्य था। उसके पूर्वजों को जगटी गांव जागीर के रूप में मिला था। डीडो का जन्म 1780 के चैत मास में हुआ। जब वह बड़ा हुआ तो एक वीर योद्धा के रूप में उभरा। सन् 1808 में सिक्खों ने जब जम्मू पर हमला किया तो उसने जम्मू के राजा की ओर से लड़ाई में भाग लिया और खालसा सेना को युद्ध भूमि से भागने को विवश किया। जम्मू के राजा ने लड़ाई में जीतने के बावजूद भी जब सिक्ख सरदारों के आगे सिर झुकाया तो मियां डीडो ने इसे डोगरा जाति के गौरव के विरूद्ध बताया और लाहौर दरबार के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

लाहौर दरबार ने मियां डीडो को दमन करने के लिए जम्मू परगना में स्थान–स्थान पर सैनिक चौकियां स्थापित करके उसके विरूद्ध कई सैनिक अभियान चलाये। मियां डीडो को डुग्गर के लोगों का समर्थन प्राप्त था और वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में उसकी सहायता करते थे। मियां डीडो ने खालसा सेना से गुरिल्ला ढंग की लड़ाई लड़ने के लिए अपने सहयोगियों का एक दल बना लिया। डीडो के आह्वान पर डुग्गर के गांव–गांव में खालसा सरकार के विरूद्ध विद्रोह भड़क उठा। लोगों ने खालसा अधिकारियों के आदेश मानना और उन्हें मालिया देना बंद कर दिया।

महाराजा को डीडो की इस बात पर भी क्रोध था कि उसने शाही फरमान की अवहेलना करते हुए दो–दो तीतर पाल रखे थे। महाराजा ने जब यह अनुभव किया कि बाहर के किसी भी अधिकारी का मियां डीडो को पकड़ना संभव नहीं है तो उसने जम्मू के मियां गुलाब सिंह को ही यह काम सौंपा। उसने डीडो के कुछ साथियों को जो जेल में बंद पड़े थे, मुक्त करवाया। उसने डीडो के पास यह संदेश भेजा कि हम एक ही बिरादरी के हैं, अतः हमें एक दूसरे के विरूद्ध नहीं लड़ना चाहिए। हम भी तुम्हारी तरह जम्मू के लिए आजादी चाहते हैं। किन्तु हमारा मार्ग अलग है। तुम भी हमारे मार्ग पर आ जाओ और महाराजा की अधीनता स्वीकार कर लो। किन्तु मियां डीडो ने गुलाब सिंह का प्रस्ताव नहीं माना। अंत में गुलाब सिंह ने मियां डीडो के विरूद्ध सैनिक अभियान आरंभ कर दिया। भरथल गांव में मियां डीडो का ननिहाल था। गुलाब सिंह ने मियां डीडो के मामा को अपने पक्ष में किया हुआ था। गुलाब सिंह ने उसी को आगे किया और पीछे से मियां डीडो पर गोली चलवाई। गोली मियां डीडो की छाती में लगी और वह चट्टान से गिर कर पहाड़ी ढलान पर गिर पड़ा। मियां डीडो के वध के बाद जम्मू परगना में कई वर्षों से चल रहा विद्रोह शांत हो गया। कुछ भी हो मियां डीडो एक बहादुर, साहसी और निडर व्यक्ति था, जिसकी खौफनाक तलवार के सामने बड़े–बडे सूरमा भी घबराते थे। स्थानीय जनता का सहयोग एवं सरदारों का समर्थन उसकी लोकप्रियता के परिचायक थे। ■■■

मियां डीडो को डुग्गर के लोगों का समर्थन प्राप्त था और वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में उसकी सहायता करते थे। मियां डीडो ने खालसा सेना से गुरिल्ला ढंग की लड़ाई लड़ने के लिए अपने सहयोगियों का एक दल बना लिया। डीडो के आह्वान पर डुग्गर के गांव–गांव में खालसा सरकार के विरूद्ध विद्रोह भड़क उठा।

सभी देशवासियों को नव संवत्सर २०७३ की हार्दिक शुभकामनायें

सेल SAIL

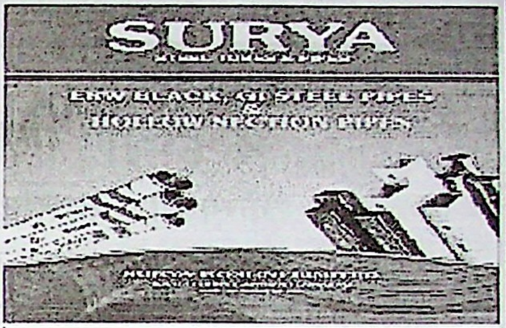

AUTH. DEALER FOR THE SALE OF TMT, GP/GC/HR SHEETS & LIGHT STEEL STRUCTURALS	AUTH. DEALER FOR THE SALE OF ERW BLACK & HOLLOW SECTION PIPES & TUBES

durashine

TATA BLUESCOPE

BUILDING PRODUCTS

AUTH. DEALER FOR THE SALE OF TATA SHAKTEE GP/GC SHEETS	AUTH. DEALER FOR THE SALE OF COLOUR COATED PROFILE SHEETS

HARINDER GUPTA

State Gen. Secretary BJP (J&K)

M: 9419182210

UNITED STEEL TRADERS

DEALS IN

ANGLE, FLAT, ROUND, SQUARE, CHANNEL, T-IRON, SECTION JOIST, M.S PIPES & TUBES, DOOR/SHUTTER PROFILES, FIBER SHEETS, COLOUR COATED SHEETS, GC/GP/HR/CR/PLATES & WELDING MATERIALS

M.B.S Road Jeevan Nagar Jammu Ph. 01912432209, 2435692

Email:- hgunited11@gmail.com.

मो. 8716007558

पं. विजय कुमार कौशल

गौ सेवा समिति मैत्रा रामबन
की ओर से सभी भारतवासियों को
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

नव संवत्सर 2073 मंगलमय हो

विवेक गुप्ता
मो. 9419191008

मल्होत्रा बिल्डिंग मैटिरियल

कैम्प रोड तालाब तिल्लो, जम्मू–180002

हर प्रकार की सैनिट्री फिटिंग, पेन्ट तथा हार्डवेयर सामान के विश्वसनीय विक्रेता

नव संवत्सर 2073 मंगलमय हो

(M) : 9419192400

KALINDI NURSING HOME

SUBASH NAGAR, JAMMU.

Dr. Vishav Gupta
(M.D. Gynae & Obs)

Dr. Kamini Gupta
(M.D. Gynae & Obs)

Dr. Vidyut Gupta

नव संवत्सर 2073 मंगलमय हो

Vijay Trehan
9419182451

VIJAY TIMBERS

Manuf. Of : Quality Joinery (Doors, Windows etc.), Furniture Products
Wholesale of :
All types of Local & Imported Wood, Sleepers Cut Sizes, Safeda ballies, Plates, Fatta, Bans, Ply, Modular Kitchen, Marble, Ceremic Tiles, Sanitary & Allied Products.

जातिवाद से देश को बचाना है तो सभी
धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों द्वारा
समरसता के भाव को सुदृढ़ करने के लिए
हर संभव प्रयास करने की परम आवश्यकता है

Near Hindustan Pencil Factory, Akhnoor Road, P.O. Talab Tillo, Jammu - 2

E-mail : vijayforestsproducts@gmal.com

महाराजा हरि सिंह

जम्मू कश्मीर राज्य में 1925 से 1947 तक महाराजा हरि सिंह का शासन काल रहा। अपने शासन काल में महाराजा ने कई क्रान्तिकारी कदम उठाए जिनकी मिसाल देश के अन्य रजवाड़ों में बहुत कम मिलती है।

महाराजा ने समाज से छुआ–छूत दूर करने हेतु निम्नवर्ग की बच्चियों का नव दुर्गा के रूप में पूजन आरम्भ करवाया। इन्हीं के समय निम्नवर्ग के बन्धुओं को मंदिरों में पूजा करने के अधिकार का शुभारम्भ हुआ। महाराजा स्वयं कट्टर सनातनी थे परन्तु वह सभी धर्मो का सम्मान करते थे।

अपने शासन की बागडोर संभालते ही महाराजा ने समाज से छुआ–छूत दूर करने हेतु निम्नवर्ग की बच्चियों का नव दुर्गा के रूप में पूजन आरम्भ करवाया। इन्हीं के समय निम्नवर्ग के बन्धुओं को मंदिरों में पूजा करने के अधिकार का शुभारम्भ हुआ। महाराजा स्वयं कटटर सनातनी थे परन्तु वह सभी धर्मो का सम्मान करते थे। वह कहा करते थे कि एक शासक के नाते मेरा कोई धर्म नहीं, केवल मात्र न्याय ही मेरा धर्म है। मेरे लिए सभी वर्ग, जातियां एवं पूजा पद्धतियां एक जैसी हैं। बाल– विवाह, वैश्यावृत्ति तथा बच्चों द्वारा तम्बाकू के सेवन पर रोक एवं अन्य कई महाराजा द्वारा उठाए गए साहसिक कदम थे जिनसे उनके स्वतन्त्र दृष्टिकोण का पता चलता है। पूरे राज्य में शिक्षा को आवश्यक घोषित करके पांचवी कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना महाराजा का एक और महत्वपूर्ण एवं क्रान्तिकारी कदम था।

महाराजा ने अपनी पूजा पर धर्म, जाति व क्षेत्र के आधार पर कभी भेद–भाव नहीं किया। जम्मू–कश्मीर सम्भागों में एक समान ही महाराजा की नीतियों का लाभ हुआ। यदि हम महाराजा हरि सिंह के शासन काल को स्वर्णकाल की संज्ञा दें तो यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

कुछ आलोचकों का विचार है कि अग्रेंजों द्वारा तय की गयी निश्चित तिथि तक यदि महाराजा विलय संबधी निर्णय ले लेते तो राज्य के हालात इतने नहीं बिगड़ते और पाकिस्तान को कबायली हमलावरों की सहायता से राज्य के एक बड़े हिस्से को हथियाने का शायद अवसर भी प्राप्त न होता। परन्तु महाराजा के साथ रहे ए.डी.सी. कैप्टन दिवान सिंह का मानना है कि ब्रिटिश इंडिया सरकार के तत्कालीन प्रतिनिधि वायसराए लार्ड माउंटबेटन ने महाराजा हरि सिंह पर पाकिस्तान के साथ विलय करने के लिए दबाव नहीं बनाया होता तो विलय पत्र पर हस्ताक्षर पर देरी न होती और पाकिस्तान की ओर से कबायली हमला न होता। ब्रिटिश सरकार कश्मीर का विलय पाकिस्तान के साथ चाहती थी, लेकिन महाराजा भारत के साथ विलय संबधी अपनी जिद्ध पर अड़े रहे। अग्रेजी सरकार की शह पर पाकिस्तानी सरकार के आगे कभी न झुकने वाले महाराजा ने कांग्रेस की राजनीति के आगे भी घुटने नहीं टेके। वह दूर दृष्टा थे। पाकिस्तान द्वारा कश्मीर को हथियाने के सारे षडयंत्र को वह अच्छी तरह समझते थे। दूसरा रा. स्व संघ के सरसंघचालक गुरु गोलवलकार जी की भी महाराजा को विलय संबधी निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका रही जिसे महाराजा के प्रधान मंत्री जस्टिस मेहर चन्द्र महाजन ने भी स्वीकार किया है। ■■■

देवी दित्ता

—नीलम सरीन

> एक दिन गुरु सूर्यनारायण जी जब वापिस जाने लगे, तब दत्तु भी साथ–साथ चल पड़े। गुरु के पूछने पर दतु ने अपने निक्कटवर रहने की बात बताई। गंगा के किनारे सूर्यनारायण जी ने दत्तु की जीभ पर एक बीजमंत्र लिखा और गंगा में डुबकी लगाने के लिए कहा। कहते हैं कि जब दत्तु डुबकी लगाकर बाहर आए तब वह "कमलनेत्र" स्त्रोत बोल रहे थे। इस तरह गुरु कृपा से वह दतु से कवि देवी दिता हो गए।

डोगरी भाषा का पहला कवि, पहला सहित्यकार अट्ठारवीं शताब्दी में हुआ है। जिनका नाम दत्तु था। इनका जन्म आज की तहसील बसोहली के भडडू नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता जी का नाम अम्बरीष था। वह गौड ब्राह्मण थे। पैसे की कमी के कारण परिवार का गुजारा मुश्किल से चलता था।

उन दिनों भडडू में भडवाल वंश के राजा पृथीपाल सिंह का राज्य था और जम्मू में उस वक्त राजा रणजीत देव का शासन था। जम्मू के राजकुमार ब्रजदेव राजा पृथीपाल के मित्र थे। उन्ही के कारण दत्तु कुमार आए थे। तकरीबन अठाईस बर्ष तक जम्मू ही रहे। क्योंकि दत्तु के जीवन प्रसगों में इन राजाओं के अलावा जम्मू में राजकुमार ब्रजदेव का जिक्र भी मिलता है।

एक बार काशी से विद्वान गुरु सूर्यनारायण सुकराला माता आए। अम्बरीष ने अपने पुत्र दत्तु को गुरु की सेवा के लिए उनके पास छोड़ दिया। दत्तु बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ गुरु की सेवा करने लगे और साथ ही उनसे शिक्षा भी ग्रहण करते। कहते हैं कि दत्तु उस समय मंद बुद्धि थे, इसलिए वह उनसे कुछ भी सीख नही सके। आखिर में एक दिन गुरु सूर्यनारायण जी जब वापिस जाने लगे, तब दत्तु भी साथ–साथ चल पड़े। गुरु के पूछने पर दतु ने अपने निरक्षर रहने की बात बताई। गंगा के किनारे सूर्यनारायण जी ने दत्तु की जीभ पर एक बीजमंत्र लिखा और गंगा में डुबकी लगाने के लिए कहा। कहते हैं कि जब दत्तु डुबकी लगाकर बाहर आए तब वह "कमलनेत्र" स्त्रोत बोल रहे थे। इस तरह गुरु कृपा से वह दत्तु से कवि देवी दित्ता हो गए। इन्होंने ब्रज भाषा में कविता लिखना आरम्भ कर दिया। "कमलनेत्र" स्त्रोत के अलावा "वीर विलास", "बारा माह", "दत संग्रह" फुटकर रचनाओं आदि की रचना की। बिलावर के राजा की मृत्यु पर "भूप वियोग", बसोहली के राजा अमृतपाल की मृत्यु पर "अमृत वियोग" लिखा।

डोगरी भाषा में कवि के रूप में जिस कविता द्वारा इन्होंने ख्याति प्राप्त की, वह इस तरह है–

सिक्ख दियां मिकी देवी दित्ता। किल्लिया बतना छुड़ो दित्ता,
इब्बै साथै कन्ने भरी ल्यान्नी आं पानी। बुरा बो लोक इस गंगथा दा,
अनदोसिया गी दोस दिन्दा ऐ जानी। कियां कुसै कन्ने हस्सना–बोलना,
कियां कुसै कन्ने गल्ल गलानी? सिक्ख दियां मिकी देवी दित्ता।
हुन सस्स–ननाण असें कियां समझानी ?

लगभग तीन शताब्दी पूर्व भडडू के रहने वाले कवि देवी दित्ता द्वारा लिखी डोगरी में कविता की भाषा शैली ठीक वैसी है, जैसी जम्मू में आज बोली जाती है। आज की भांति नई और ताजा है। कवि देवी दित्ता डोगरी भाषा को देवनागरी में लिपिबद्ध करने वाला पहला कवि भी माना जा सकता है। इनसे पहले टाकरी लिपि का प्रयोग होता था। डोगरी भाषा की लखाई के पुराने नमूने शिला लेखों, त्रामों एवं दूसरे पट्टों, सरकारी आलेख, हुक्मनामों चिट्ठियों, पत्रों पर मिलते हैं। ■■■

वीर बलिदानी रामचन्द्र

> उन्होंने विशिष्ट कार्य हेतु अपने कर्तव्य की पूर्ति के लिए शिक्षा के महत्व को स्वीकारा और इसके लिए वैदिक पाठशालाओं के निर्माण करने पर बल दिया। उन्होंने पूर्वागस्त जनता में अंधविश्वास और जात–पात को त्यागने के लिए शुद्धि भारतीय प्रकरण वेद वाक्य अनुसार अपनाया और हिन्दुओं में आर्य जाति के मूल्यों के प्रति श्रेष्ठता का भाव जगाया।

श्री रामचन्द्र का जन्म पहली जुलाई सन् 1897 को हीरानगर में एक महाजन परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम खोजू शाह था और वह खजानची की सरकारी नौकरी करते थे। श्रीराम चन्द्र ने आठवीं कक्षा पास करने के बाद अपने पिता के सेवा निवृत्त होने पर उनके स्थान पर खजानची का पदभार संभाला। उन्हें कुछ समय बाद साम्बा और उसके पश्चात् अखनूर में स्थानांतरित किया गया।

उन दिनों स्वतंत्रता संग्राम जोरों पर था और क्रांतिकारियों के साथ–साथ आर्य समाज भी अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहा था। वीर राम चन्द्र इस समाजी परिस्थितियों में आर्य समाज के हरीजन उद्धार और शैक्षिक आंदोलन से प्रेरित होकर एक कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में आर्य समाज का प्रचार प्रसार और जोर शोर से करने लगे। महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज में "सत्यार्थ प्रकाश" अनुसार ही वेदों की नवीन व्याख्या परिभाषित की गई थी और जिस के कारण नवीन चेतना का आंदोलन अग्रसर हुआ। वह आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्पर्क में रहते थे और जम्मू के दयानंद मार्ग आर्य समाज से भी आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रबोधक प्रयोजन के लिए प्रचारकों और उपदेशकों का साथ मिलता था। उन्होंने अस्पृष्यता अथवा अछूत होने की रूढ़िवादी लोगों की विचार धारा की भर्तस्ना करने के लिए यक्ष, चोटी, जनेऊ, और ओइम् के झंडे को वैदिक प्रचार सप्ताह का गांव–गांव जाकर अभियान का संचालन किया जिसके कारण यहां एक और उनकी प्रतिष्ठा बड़ी, वहीं दूसरी ओर उनका विरोध भी सक्रिय रूप धारण करने लगा।

अखनूर में उन की वैदिक पाठ्यशाला को कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा जिसमें भवन के निर्माण की समस्या भी थी और जिनको महाराजा हरिसिंह के उदार पूर्ण दृष्टिकोण कारण ही हल किया गया। हरिजनों के मंदिर प्रवेश का समाधान संपन्न भी किया गया परन्तु आर्य समाज और वीर रामचन्द्र की गतिविधियों पर अत्याचार बढ़ गया। लेकिन ओइम् का झंडा लेकर पैदल जलूस निकालते और लोगों में आर्य समाजी बनने के लिए आह्वान करते। बटैहड़ा गांव में कुछ लोगों के निमंत्रण पर उन्होंने हरिजन उद्धार के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया। 14 जनवरी 1923 को जब जलसे में प्रवचन करने के पश्चात टांगे में वैदिक प्रचारकों अथवा उपदेशकों सहित वापस जम्मू जा रहे थे तभी शरारती तत्वों ने उन पर जान लेवा हमला किया जिसमें वीर राम चन्द्र को घेर कर मारा पीटा गया जबकि उनके बाकी साथी जान बचाकर भागने में सफल रहे। घायल अवस्था में वीर राम चन्द्र को जम्मू हस्तपाल में दाखिल करवाया गया यहां 20 जनवरी 1923 को उन्होंनें वीरगति प्राप्त की। जज करतार सिंह गढ़ी (अखनूर निवासी) की प्रेरणा के कारण मुकद्मा चलाया गया जिसमें सभी को 7 से लेकर ढाई–ढाई साल की सजा हुई।

आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर ने बटैहड़ा में जमीन खरीद कर वीर रामचन्द्र वैदिक पाठशाला और पुस्तकालय का निर्माण किया और आर्य समाज बटैहड़ा की स्थापना की। एक कुआं खुदवाया जहां स्वर्णों के साथ बाकी दलित या वंचित वर्ग भी पानी निकाल सकते थे और एक बाग भी लगवाया जिसमें वीर रामचन्द्र की समाधि और यज्ञ–हवनकुंड बनाया। बटैहड़ा में वार्षिक सम्मेलन में श्रद्धांजलि समारोह में इस महान डोगरा नायक के ऐतिहासिक योगदान को याद किया जाता है। ■■■

—ध्यान सिंह

सम्राट ललितादित्य और वैद्यराज शिर्यभट्ट

सम्राट ललितादित्य कारकोट वंश के सबसे प्रभावशाली और प्रतापी राजा थे। कश्मीर के इस प्रतापी राजा ने भारत के उत्तर में स्थित मध्य एशिया, तिब्बत और दक्षिण में कोङकन तक अपना राज–विस्तार किया। इसके राजकाल में भारत एवं अन्य देशों से महान शिल्पी, कलाकार, लेखक और दार्शनिक कश्मीर पधारे और इस पुण्य भूमि को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का मुकुटमणि बनाया।

उल्लेखनीय यह है कि सम्राट ललितादित्य ने बरबर मलेच्छ आक्रमणकारियों को भारत की उत्तरी सीमाओं (वर्तमान अफगानिस्तान) के परे धकेल दिया। ललितादित्य ने कई बार तुर्को पर भी विजय पाई थी।

महमूद गजनवी का इतिहासकार ''अल्बिरूनी'' अपनी ऐतिहासिक पुस्तक' ''किताबु–ल–हिन्द'' में लिखता है कि चैत्रमास के दूसरे दिन कश्मीरी बड़े चाव से एक उत्सव मनाते हैं जिसको वे 'ओगदुस'' (ओकदोह, प्रतिपदा) कहते हैं। क्योंकि इस दिन उनके राजा ''मुताई'' ने तुर्को पर विजय पाई थी। मुताई वास्तव में मुक्तापीड ललितादित्य ही हैं, जिनको चीनी भाषा में ''मोतोपा'' कहा गया है। इस तथ्य की पुष्टि कश्मीर के प्रसिद्ध विद्वान पदमश्री मोती लाल साकी ने भी की है।

वर्तमान परिस्थितियों में यह दिन अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि एक बार पुनः चल रही इस्लामी कटटरवादी विचारधारा एवं षडयंत्रों की आंधी से अपने राष्ट्र भारत एवं भारतीय संस्कृति को अक्षुण रखने हेतु जो संघर्ष चल रहा है उसमें ललितादित्य की महान् विजय गाथा हमें बल और शक्ति प्रदान करती है।

कहा जाता है कि राजस्थान की लड़ाई (736–738 ई0) में सम्राट ललितादित्य (724–760ई) ने मुस्लिम उमायैद खलीफा के विरूद्ध बप्पा रावल, नागभट्ट और चालूक्य वंश के हिन्दू राजाओं की सहायता की थी। इसी कारण कश्मीरी चैत्र शुक्लपक्ष द्वितीय को मुस्लिम राजाओं पर विजय प्राप्ति अर्थात ''विजय दिवस'' के रूप में मनाते थे।

सुल्तान सिकन्दर ''बुतशिकन'' (1930–1410ई) ने अपने राजकाल में कश्मीर में स्थित मंदिरों, मठों, पुस्तकालयों को ध्वस्त कर दिया और हजारों हिन्दुओं को बलपूर्वक इस्लाम स्वीकार करने पर विवश कर किया। ऐसा जान पड़ता था कि कश्मीर में हिन्दू सभ्यता एकदम बुझ गई है।

सिकन्दर के बाद उसके पुत्र जैनुलाब्दीन ने भी हिन्दू विरोधी कार्यक्रम जारी रखा। कहते हैं कि सुल्तान को एक घातक फोड़े ने जकड़ लिया। उपचार के सभी प्रयत्न विफल हुए। राजघोषणा हुई कि जो कोई राजा को स्वस्थ करेगा उसे मनचाहा इनाम दिया जायेगा। किसी ने वैद्यराज शिर्यभटट का नाम सुझाया। शिर्यभट्ट ने राजा का सफल उपचार किया और राजा स्वस्थ हुआ। राजा ने शिर्यभटट को अपनी मनोकामना प्रकट करने को कहा, **''जो मांगोगे दिया जायेगा''**

निर्धन शिर्यभटट को अपनी स्वजनों के प्रति सहानुभूति उमड़ पड़ी और अपने लिये कुछ न मांग कर कहा, ''राजन हिन्दुओं के प्रति अत्याचार एवं अन्याय समाप्त होना चाहिए। हिन्दुओं पर लगाया गया ''कर'' यानि ''जजिया'' समाप्त किया जाए। मंदिरों की सुरक्षा हो और गोवध समाप्त हो तथा कश्मीर से भगाए हुए हिन्दुओं को वापस बुलाकर उनका पुर्नवास किया जाये। सुल्तान ने शिर्यभटट की सभी इच्छाएं स्वीकार की। इसी कारण सुल्तान जैनुलाब्दीन को ''बडशाह'' कहा जाने लगा।

शिर्यभट्ट के त्याग एवं मानव प्रेम ने कट्टरवादी मुस्लिम राजा को ''बडशाह'' बना दिया और गहन अंधकार में मानवता का दीप प्रज्ज्वलित किया। ऐसे महान त्यागी का जन्म दिवस चैत्रकृष्णपक्ष अमावस्या को मनाया जाता है। ■■■ –संजीवनी शारदा केन्द्र

Mukesh Kumar Sharma
Prop.

Mob. : 9419196527
9596803519

KRISHNA PALACE BANQUET HALL

NEAR MATADOR STAND, MUTHI JAMMU.

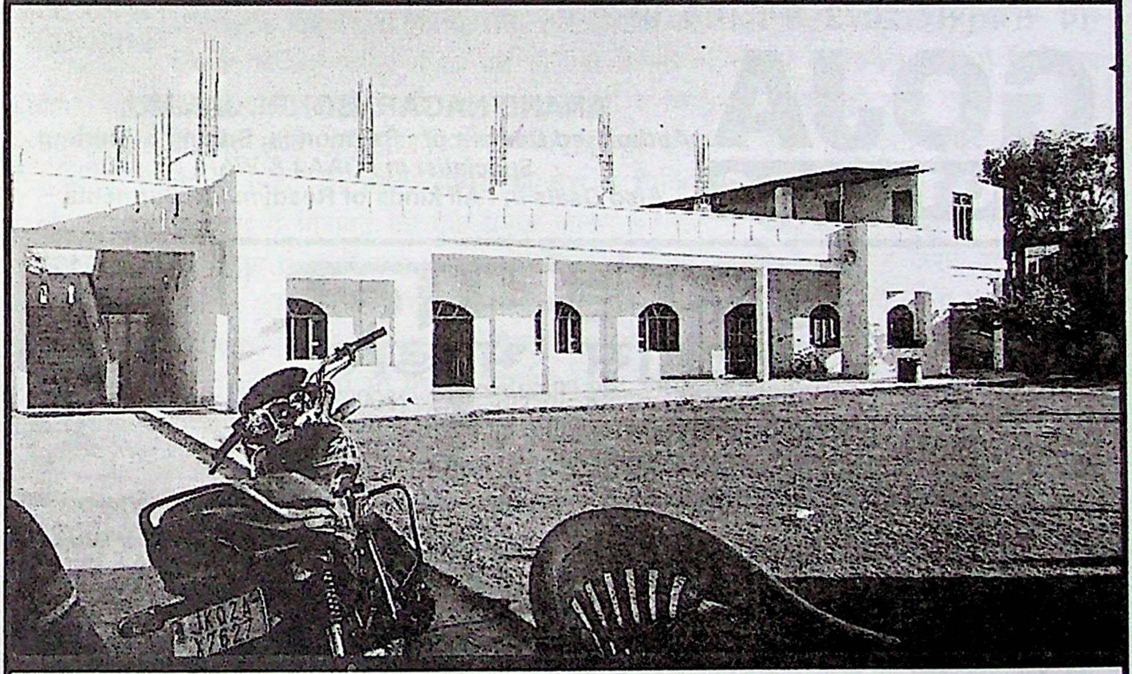

Wishes you all a very happy
&
prosperious Nav Samvatsar 2073

संजय गुप्ता
मो. 9419140998

जण्डयाल प्रोविज़न स्टोर

रेलवे रोड़, नानक नगर की ओर से त्रिकुटा संकल्प के
सभी पाठकों को नव संवत्सर की हार्दिक शुभकामनायें

नूतन वर्ष 2073 की शुभ कामनायें

HOUSE OF B. D. GROUP

Factory : National Highway, Kaluchak, Jammu
Office : Upper Gumat Bazar, Jammu-180001
E-mail : houseofbdgroup@rediffmail.com
Tele : (O) 0191-2560192, ® 0191-2475054
Mobile : 9419188337

- Sneh Footwear
- Sneh Enterprises
- B. D. Enterprises
- Campus Showroom

B. D. Gupta

नव संवत्सर 2073 मंगलमय हो

(M) : 9419362713
9419146629

GOJA BROTHERS

ANAND NAGAR, BOHRI, JAMMU.
Authorised Dealers of : Raymonds, Suiting & Shirting
Specialist in : DAAJ & WARI
Also Deals in : All kinds of Readymade Garments

रवि कुमार

(M) : 9419221291

जण्डयाल
कटपीस भण्डार

पाटा बोहड़ी, तालाब तिल्लो, जम्मू–180002
की ओर से जम्मू कश्मीर के निवासियों को
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

विरेन्द्र गुप्ता

(M) : 9419109215

गुप्ता ड्राईफ्रूट

दुकान नं. 49, 50, 51 जनरल बस स्टैंड, जम्मू
की ओर से सभी भारतवासियों को
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

धर्म चन्द
मो. 9419140998

कमल एकैडमी हाई स्कूल

चन्द्रकोट रामबन
की ओर से सभी भारतवासियों को
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा
11–13 मार्च 2016, नागौर, राजस्थान

प्रस्ताव क्र. 1

प्रभावी स्वास्थ्य रक्षा एवं सस्ती व सुलभ चिकित्सा की आवश्यकता

देश में सभी नागरिक आजीवन स्वस्थ व निरोग रहें इस हेतु स्वास्थ्यपूर्ण जीवनशैली का अनुसरण एवं सर्व साधारण के लिये चिकित्सा की सुलभता परम आवश्यक है। आज देश में जहाँ अस्वास्थ्यकर जीवन शैली से उत्पन्न होनेवाले रोग तेजी से बढ़ रहे हैं, वहीं चिकित्सा सेवाएं महंगी होने से ये सामान्य नागरिकों की पहुंच से बाहर होती जा रही हैं। परिणामस्वरूप, अनगिनत परिवार ऋणग्रस्त हो रहे हैं अथवा परिवार के कार्यशील सदस्यों का रोगोपचार नहीं हो पाने की दशा में बड़ी संख्या में परिवारों का जीवन यापन भी कठिन हो रहा है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त करती है।

चिकित्सा सेवाओं के बड़े नगरों में केन्द्रित होने से देशभर में दूरस्थ व ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधाओं का भारी अभाव है। सभी स्तरों पर इन सुविधाओं व चिकित्साकर्मियों की भारी कमी और भर्ती, जांच व उपचार के लिए लम्बी प्रतीक्षा सूचियों के कारण बड़ी संख्या में लोग चिकित्सा सुविधा से वंचित रह जाते हैं। चिकित्सा शिक्षा की बढ़ती लागतें भी देश में चिकित्सा सेवाओं के मंहगा होने एवं उनकी गुणवत्ता व विश्वसनीयता में गिरावट का एक प्रमुख कारण है। देश में महिलाओं व शिशुओं सहित सभी नागरिकों को अच्छी गुणवत्ता वाली सब प्रकार की चिकित्सा सेवाएं उनके द्वारा वहन करने योग्य लागत पर सुलभ होनी चाहिये। इस हेतु देशभर में विशेषकर ग्रामीण व जनजातीय क्षेत्रों तक सभी प्रणालियों की सब प्रकार की चिकित्सा सेवाओं का सुचारू विस्तार आवश्यक है। चिकित्सा में निरन्तरता व विशेषज्ञ परामर्श हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का भी प्रभावी उपयोग किया जाना चाहिए।

पिछले कुछ वर्षों में कई राज्यों में प्रारम्भ की गई निःशुल्क औषधि वितरण योजनाएं एवं केन्द्र सरकार द्वारा हाल के बजट में 3000 जेनेरिक औषधि केन्द्रों का प्रस्ताव स्वागत योग्य है। दवाईयों के मूल्य को आम व्यक्ति की पहुंच में लाने हेतु जेनेरिक औषधियों को प्रोत्साहन, औषधि–मूल्यों पर प्रभावी नियन्त्रण, एवं पेटेण्ट व्यवस्था को मानवोचित बनाया जाना आवश्यक है। औषधियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु उनके सभी प्रकार के नियमित प्रयोगशाला परीक्षण भी होने चाहिए। आयुर्वेदिक, यूनानी व अन्य पद्धतियों की औषधियों का प्रमाणीकरण व उनके परीक्षण की विधियों का विकास भी महत्वपूर्ण है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा स्वयंसेवकों सहित सभी देशवासियों, स्वैच्छिक संगठनों व सरकार का आवाहन करती है कि सभी नागरिकों के जीवन को निरामय बनाने हेतु स्वास्थ्यप्रद जीवनचर्या, शिशु व जननी स्वास्थ्य रक्षा और कुपोषण व नशा विमुक्ति हेतु समाज जागरण के प्रयास करें। केन्द्र व राज्य सरकारों से आग्रह है कि सभी प्रकार की स्वास्थ्य सेवाओं की सर्वसाधारण के लिए सुलभता हेतु पर्याप्त संसाधन आवंटन करते हुए इन सेवाओं में अपेक्षित ढांचागत, नीतिगत व प्रक्रियागत सुधार करने चाहिए। इसके लिए देश में सभी प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों के समन्वित विस्तार, नियमन, शिक्षण व अनुसन्धान को समुचित प्रोत्साहन देवें तथा नियामक व्यवस्था व वैधानिक प्रावधानों को पारदर्शिता पूर्वक लागू करें

प्रस्ताव क्र. 2

गुणवत्तापूर्ण एवं सस्ती शिक्षा सबको सुलभ हो

किसी भी राष्ट्र व समाज के सर्वांगीण विकास में शिक्षा एक अनिवार्य साधन है, जिसके संपोषण, संवर्द्धन व संरक्षण का दायित्व समाज व सरकार दोनों का है। शिक्षा छात्र के अन्दर बीजरूप में स्थित गुणों व संभावनाओं को उभारते हुए उसके व्यक्तित्व के समग्र विकास का साधन है। एक लोक कल्याणकारी राज्य में शासन का यह मूलभूत दायित्व है कि वह प्रत्येक नागरिक को रोटी, कपड़ा, मकान और रोजगार के साथ–साथ शिक्षा व चिकित्सा की उपलब्धता सुनिश्चित करे।

भारत सर्वाधिक युवाओं का देश है। इस युवा की अभिरूचि, योग्यता व क्षमता के अनुसार उसे उचित शिक्षा के निर्बाध अवसर उपलब्ध कराकर देश के वैज्ञानिक, तकनीकी, आर्थिक व सामाजिक विकास में सहभागी बनाना समाज एवं सरकार का दायित्व है। आज सभी अभिभावक अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाना चाहते हैं। जहाँ शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है वहाँ उन सबके लिए सस्ती व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पाना दुर्लभ हो गया है। विगत वर्षों में सरकार द्वारा शिक्षा में अपर्याप्त आवंटन और नीतियों में शिक्षा को प्राथमिकता के अभाव के कारण लाभ के उद्देश्य से काम करने वाली संस्थाओं को खुला क्षेत्र मिल गया है। आज गरीब छात्र समुचित व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा से वंचित हो रहे हैं। परिणामस्वरूप समाज में बढ़ती आर्थिक विषमता समूचे राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह मानना है कि प्रत्येक बालक–बालिका को मूल्यपरक, राष्ट्र भाव से युक्त, रोजगारोन्मुख तथा कौशल आधारित शिक्षा समान अवसर के परिवेष में प्राप्त होनी चाहिए। राजकीय व निजी विद्यालयों के शिक्षकों का स्तर सुधारने हेतु शिक्षकों को यथोचित प्रशिक्षण, समुचित वेतन तथा उनकी कर्त्तव्यपरायणता दृढ़ करना भी अति आवश्यक है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा केन्द्र, राज्य सरकारों व स्थानीय निकायों से आग्रह करती है कि सस्ती व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सबको उपलब्ध कराने के लिए समुचित संसाधनों की व्यवस्था तथा उपयुक्त वैधानिक प्रावधान सुनिश्चित करें। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा स्वयंसेवकों सहित समस्त देशवासियों का भी आवाहन करती है कि शिक्षा प्रदान करने के पावन कार्य हेतु विशेषकर ग्रामीण, जनजातीय एवं अविकसित क्षेत्र में वे आगे आवें ताकि एक योग्य, क्षमतावान व ज्ञानाधारित समाज का निर्माण हो सके जो इस राष्ट्र के उत्थान व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

संपर्क सहयोग संस्कार सेवा समर्पण

भारत विकास परिषद्

जम्मू पश्चिम शाखा

राष्ट्र चिन्तन व देश प्रेम जागृत करने हेतु भारत विकास परिषद् के सदस्य बनकर अपना सहयोग दें।

PRESIDENT	SECRETARY	TREASURER
Sukriti Choudhary	Devinder Kumar	Chanan Mohan Gupta
Mob. : 9796446814	Mob.: 9469212321	Mob.: 9419307256

<u>प्रस्ताव क्र. 3</u>

दैनन्दिन जीवन में समरसतापूर्ण व्यवहार करें

भारत एक प्राचीन राष्ट्र है और इसकी चिन्तन परम्परा भी अति प्राचीन है। हमारी अनुभूत मान्यता है कि चराचर सृष्टि का निर्माण एक ही तत्व से हुआ है और प्राणिमात्र में उसी तत्व का वास है। सभी मनुष्य समान हैं, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य में वही ईश्वरीय तत्व समान रूप से व्याप्त है। इस सत्य को ऋषियों, मुनियों, गुरुओं, संतगणों तथा समाज सुधारकों ने अंपने अनुभव एवं आचरण के आधार पर पुष्ट किया है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने दैनन्दिन जीवन में व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर अपने इस सनातन और शाश्वत जीवन दर्शन के अनुरूप समरसतापूर्ण आचरण करना चाहिए। ऐसे आचरण से ही समाज से जाति भेद, अस्पृश्यता तथा परस्पर अविश्वास का वातावरण समाप्त होगा एवं तभी हम सब शोषणमुक्त, एकात्म और समरस जीवन का अनुभव कर सकेंगे।

राष्ट्र की शक्ति समाज में और समाज की शक्ति एकात्मता, समरसता का भाव व आचरण और बंधुत्व में ही निहित है। इसका निर्माण करने का सामर्थ्य अपने सनातन दर्शन में है। "आत्मवत् सर्व भूतेषु" (सभी प्राणियों को अपने समान मानना) "अद्वेष्टा सर्वभूतानां" (सभी प्राणियों के साथ द्वेशरहित रहना) तथा 'एक नूर ते सब जग उपज्या, कौण भले, कौण मन्दे' (एक तेज से पूरे जग का निर्माण हुआ तो कौन बड़ा और कौन छोटा) के अनुसार सबके साथ आत्मीयता, सम्मान एवं समता का व्यवहार होना चाहिए। समाज जीवन से भेदभाव पूर्ण व्यवहार तथा अस्पृश्यता जैसी कुप्रथा जड़ मूल से समाप्त होनी चाहिए। समाज जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए समाज की सभी धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को इसी दिशा में कार्यरत होना चाहिए, यह महती आवश्यकता है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सभी पूज्य संतों, प्रवचनकारों, विद्वज्जनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं से विनम्र अनुरोध करती है कि इस हेतु समाज प्रबोधन में वे भी अपना सक्रिय योगदान दें। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा स्वयंसेवकों सहित सभी नागरिकों से समरसता के अनुरूप व्यवहार करने का तथा सभी धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों से समरसता का भाव सुदृढ़ करने के हर संभव प्रयास करने का आग्रह करती है।

तक बक–तक बक, ता–ता थैइया, पॉली बैग ना–ना भईया

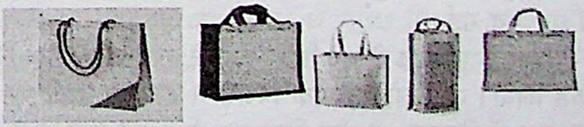

सभी देशवासियों को नव संवत् 2073 की हार्दिक शुभकामनायें

जम्मू कश्मीर राज्य महिला विकास निगम के सहयोग से
वंदना महाजन द्वारा संचालित प्रकल्प सम्पर्क 0191–2561328

बन्दा बहादुर

उत्तर भारत में जम्मू एक ऐसा प्रांत है जिसने बहुत से देश भक्त व ऐतिहासिक योद्धाओं को जन्म दिया है। जिन्होंने जनता की भलाई एवं सुरक्षा हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इसी कड़ी में बंदा बैरागी का नाम प्रमुख आता है।

जम्मू प्रांत के रियासी जिला में चिनाब दरिया के किनारे बंदा बैरागी की समाधि है। यह स्थान कटड़ा वैष्णों देवी से 28 कि.मी. की दूरी पर है। यहां जाने के लिए कटड़ा–रियासी सड़क पर 18 कि.मी. दूर सिम्बल चोआ जाना पड़ता है। वहां से 10 कि.मी. एक सड़क बंदा वैरागी के स्थान की ओर जाती है। यह वह स्थान है जहां मुगलों से लड़ाई के बाद बाबा बंदा बहादुर ईश्वर का ध्यान व साक्षात्कार करता था। यहां एक प्रसिद्ध गुरुद्वारा है जहां नित्यप्रति प्रातः सायं गुरुवाणी का पाठ होता है।

जम्मू से 102 कि.मी. दूर स्थित राजौरी जिला के जोरा ग्राम में बंदा का जन्म 16 अक्तूबर 1670 को हुआ। इनकी माता ने इनका नाम लक्ष्मण देव रखा। कोई सोच भी नहीं सकता था कि यह बच्चा बड़ा होकर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव हिला कर रख देगा। एक छोटे से हादसे ने इनकी जीवन दिशा ही बदल दी। 15 वर्ष की आयु में शिकार के दौरान इनके द्वारा गर्भवती हिरनी को तीर लगा व उसके पेट से निकले बच्चे को तड़पते मरते देख बन्दा को वैराग्य हो गया और घर छोड़ साधु हो गए। माधोदास नाम रख यह नान्देड़ में कुटिया बना कर ईश्वर भक्ति में तल्लीन हो गए। इसी दौरान गुरु गोविंद सिंह जी माधोदास की कुटिया में आए। उनके चारों पुत्र हिन्दू धर्म रक्षणार्थ बलिदान हो चुके थे। उन्होंने इस कठिन समय में माधोदास से वैराग्य छोड़ देश में व्याप्त मुस्लिम आतंक से जूझने को कहा। इस भेंट से माधोदास का जीवन बदल गया। गुरुजी ने उसे बंदा बहादुर नाम दिया। फिर पांच तीर, एक निशान साहिब, एक नगाड़ा और एक हुक्मनामा देकर दोनों छोटे पुत्रों को दीवार में चिनवाने वाले सरहिन्द के नवाब से बदला लेने को कहा।

> **जम्मू से 102 कि.मी. दूर स्थित राजौरी जिला के जोरा ग्राम में बंदा का जन्म 16 अक्तूबर 1670 को हुआ। इनकी माता ने इनका नाम लक्ष्मण देव रखा। कोई सोच भी नहीं सकता था कि यह बच्चा बड़ा होकर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव हिला कर रख देगा।**

बन्दा हजारों सिख सैनिकों को साथ लेकर पंजाब की ओर चल दिए। उन्होंने सबसे पहले श्री गुरु तेगबहादुर जी का शीश काटने वाले जल्लाद जलालुदीन का सिर काटा। फिर सरहिन्द के नवाब वजीरखान का वध किया। जिन हिन्दू राजाओं ने मुगलों का साथ दिया था, बन्दा बहादुर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। इससे चारों ओर उनके नाम की धूम मच गई।

उनके पराक्रम से भयभीत मुगलों ने दस लाख फौज लेकर उन पर हमला किया और विश्वासघात से उन्हें पकड़ लिया। उन्हें लोहे के एक पिंजड़े में बंद कर हाथी पर लादकर सड़क मार्ग से दिल्ली लाया गया। उनके साथ हजारों सिक्ख भी कैद किए गए थे। इनमें बंदा के वे 740 साथी भी थे जो आरंभ से ही उनके साथ थे। युद्ध में वीरगति पाये सिखों के सिर काटकर उन्हें भाले की नोक पर टांगकर दिल्ली लाया गया। रास्ते पर गर्म चिमटों से बंदा बैरागी का मांस नोचा जाता रहा।

बन्दा से पूछा गया कि वे कैसी मौत मरना चाहते हैं? बन्दा ने उत्तर दिया, मैं अब मौत से नहीं डरता, क्योंकि यह शरीर ही दुःख का मूल है। ऐसी भी लोकोक्ति है कि इतने कष्ट देने के बाद वैरागी को हाथी से कुचलवा दिया गया। इस प्रकार बन्दा वीर बैरागी अपने नाम के तीनों शब्दों को सार्थक कर बलिपथ पर चल दिए। ■■■

लाला हंस राज महाजन

जम्मू की पावन धरती में जिन महान् सपूतों ने जन्म लिया, उनमें लाला हंसराज महाजन का नाम प्रमुख है। 8 सितम्बर 1866 को लाला हरिचंद महाजन हमीरपुर सिद्धड (तहसील अखनूर) जिला जम्मू के घर जन्में इस बालक की असाधारण बुद्धि व प्रतिभा से प्रभावित हो कर महाराजा रणवीर सिंह ने इनकी शिक्षा का प्रबंध जम्मू में करने का आदेश दिया।

शिक्षा पूरी करने पर लाला हंस राज ने थोड़े समय के लिये सरकारी नौकरी की परंतु इस दौरान भी वह सार्वजनिक मामलों में सक्रिय रूचि लेते रहे जो कुछ अधिकारियों को अच्छा नहीं लगा, जिस कारण उन्होंने नौकरी त्याग कर वकालत करने का निर्णय लिया।

वर्ष 1916 में महाराजा प्रताप सिंह की स्वीकृति से अपने आध्यात्मिक गुरू योगी राज चम्पा नाथ की स्मृति में लाला हंसराज ने अम्बफला जम्मू में वेद मंदिर की स्थापना की। लाला जी में देश भक्ति एवं समाज सेवा की भावना कूट–कूट कर भरी थी। इन्होंने सर्वप्रथम वर्ष 1892 में अपने लोगों को एकजुट रखने हेतु महाजन सभा एवं 1904 में डोगरा सदर सभा जम्मू की नींव रखी।

लाला हंस राज उच्चकोटि के समाज सुधारक, स्वाभिमानी, निडर, स्पष्टवक्ता, जनता के हमदर्द और अनथक कार्यकर्त्ता थे। डुग्गर जाति की निष्काम भाव सेवाओं के कारण ही इन्होंने 'शेरे–डुग्गर' व बूढ़े जरनैल की उपाधियां हासिल की।

लाला जी का मानना था कि किसी जाति और देश की दशा तब तक नहीं सुधर सकती जब तक उसकी महिलाओं एवं बच्चों की दशा ठीक न हो। उनका दृढ़ विश्वास था कि नारी समाज के सुधार के बिना, कुरीतियों का उन्मूलन असंभव बातों में से एक है। वह कहा करते थे कि हमारा देश तब तक प्रगति नहीं कर सकता जब तक महिलाओं और बच्चों में उच्च कोटि के विचारों का प्रचार न हो। उन्होंने इस हेतु 'स्त्री–जीवन सुधार सभा' नामक एक सोसायटी भी गठित की। जहां एक ओर वह सति प्रथा के घोर विरोधी थे, वहीं दूसरी ओर विधवा–विवाह को उनका पूरा समर्थन था।

लाला जी अनगिनत गुणों से भरपूर थे। उनकी गिनती राज्य के उन चन्द नेताओं में होती है जिनका नाम राज्य से बाहर भी बड़े सम्मान से लिया जाता है। उनकी याद में नगर निगम पार्क जम्मू व कृष्ण नगर दिल्ली में उनकी प्रतिमाएं स्थापित कर स्मारक बनाए गए हैं। वह कहा करते थे, अच्छे विचार, अच्छी जीवन पद्धति और आपस में प्रेम के साथ रहना ही देश सेवा है।'और "जो राष्ट्र स्वयं उठने का प्रयास नहीं करते, उन्हें ईश्वर भी नहीं उठा सकता।"

देश–सेवा लाला जी के मन में कूट–कूट कर भरी हुई थी। जिसका प्रमाण उनके निम्नलिखित विचारों से मिलता है–

"ईश्वर की, "ईश्वर के भक्तों की, माता–पिता की और गुरूओं की, भाई–बहनों की, मित्रों की, राष्ट्र की, यहां तक कि संसार के हर जीव की सेवा ही महाधर्म हैं। परंतु यह बात भूलने की नहीं कि सभी प्रकार की ये सेवाएं देश–सेवा की तुलना नहीं कर सकती क्योंकि देश सेवा से ही इन सबकी सेवा होती है।"

श्री मेहर चन्द महाजन

Meharchand Mahajan

हालांकि श्री महाजन का जन्म राज्य की सीमा से सटे हिमाचल प्रदेश में हुआ परन्तु जम्मू–कश्मीर राज्य को देश में विलय हेतु उनकी भूमिका को झुटलाया नहीं जा सकता। देश के बंटवारे के समय महाराजा हरि सिंह के अनुरोध पर एवं भारत के तत्कालीन गृह मंत्री सरदार पटेल के आग्रह पर श्री महाजन ने ऐसे समय में राज्य के प्रधान मंत्री का पद ग्रहण किया जब उस पर पाक हमले के बादल मंडरा रहे थे एवं राज्य बड़ी विकट परिस्थिति से गुजर रहा था। इससे पूर्व उन्होंने रेडकल्फि आयोग के सदस्य के नाते गुरदासपुर को भारत में मिलाने हेतु निर्णायक भूमिका निभाई। यदि गुरदासपुर विभाजन की शर्तों अनुसार पाकिस्तान में चला जाता तो भारत विशेषकर जम्मू कश्मीर राज्य के लिए बड़ी विकट स्थिति बन जाती।

श्री मेहर चन्द महाजन के प्रयासों के फलस्वरूप रा. स्व. संघ के तत्कालीन सरसंघचालक गुरु गोलवलकर जी (श्रीगुरुजी) महाराजा हरि सिंह से भेंट करने श्रीनगर पहुंचे और महाराजा से राज्य को भारत में विलय हेतु शीघ्र निर्णय लेने का सुझाव दिया। उन्होंने राज्य का पाकिस्तान में विलय होने पर यहां की हिन्दू जनता पर होने वाले संकट से भी उन्हें अवगत कराया। श्री महाजन, जो कि श्री गुरू जी के साथ भेंट के समय उपस्थित थे, ने भी महाराजा को गुरु जी के सुझाव का समर्थन कर शीघ्र निर्णय लेने को कहा। जिस पर महाराजा ने विलय प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की और भारत की सेना के श्रीनगर आगमन करने से राज्य की रक्षा हो सकी। यदि विलय सम्बंधी प्रस्ताव में कुछ और देरी हुई होती तो राज्य का एक और बड़ा भाग विशेषकर श्रीनगर शहर आज पाकास्तिान का हिस्सा होता।

श्री महाजन, जो कि श्री गुरू जी के साथ भेंट के समय उपस्थित थे, ने भी महाराजा को गुरु जी के सुझाव का समर्थन कर शीघ्र निर्णय लेने को कहा। जिस पर महाराजा ने विलय प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की और भारत की सेना के श्रीनगर आगमन करने से राज्य की रक्षा हो सकी।

यदि विलय सम्बंधी प्रस्ताव में कुछ और देरी हुई होती तो राज्य का एक और बड़ा भाग विशेषकर श्रीनगर शहर आज पाकिस्तान का हिस्सा होता।

वर्ष 1948 में श्री महाजन को देश के उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्त किया गया जहां से वह 1954 को देश के तीसरे प्रधान न्यायाधीश बने।

श्री महाजन आर्यसमाज के कार्यो में अत्यन्त रूचि रखते थे। इन्होंने आर्यसमाज के प्रचार प्रसार हेतु लाखों रूपयों की धन राशि जमा करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनकी सेवाओं के फलस्वरूप उन्हें महर्षि दयानद के जन्म स्थल टंकारा आर्यसमाज का प्रधान बनाया गया।

श्री मेहर चन्द महाजन ने 35 वर्ष तक पंजाब नेशनल बैंक के डायरेक्टर पद को सुशोभित किया। वर्ष 1923 में श्री महाजन को अखिल भारतीय महाजन शिरोमणी सभा का प्रधान बनाया गया। वह एक उच्चकोटि के कर्मयोगी, देश भक्त, न्यायविद तथा शिक्षाविद थे। इन महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रह कर उन्होंने देश व समाज की महान सेवा की जिसके लिए उन्हें सदा याद रखा जाएगा। ■■■

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह

अभी ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह को अपना पदभार संभाले दो माह ही हुए थे जब वे श्रीनगर कैंट में अपने काम में लगे थे तो उन्हें इस हमले की सूचना मिली। उन्हें यह भी सूचना मिली कि मुजफ्फराबाद पर कब्जे के बाद हमलावर तेजी से श्रीनगर की ओर बढ़ रहे हैं। श्रीनगर में उस समय कोई रिजर्व सेना नहीं थीं आदेशानुसार ब्रि. ने 150 के लगभग सैनिक जिनमें रसोइये आदि भी थे एकत्रित किए और सेना के सात ट्रकों में सवार होकर तेजी से दुमेल की ओर बढ़ चले। परन्तु रास्ते में ही उन्हें पता चला कि दुमेल का पतन हो गया है और शत्रु मुजफ्फराबाद, कोहाला व दुमेल का सर्वनाश करता, हिन्दुओं का कत्लेआम करता, गांवों को लूटता, जलाता, महिलाओं को अपहरण करता समारिक महत्व के केन्द्र गढ़ी डीटा तक आ गया है तथा वहां भी लूटपाट व हत्याकांड शुरू कर दिया है। हमलावार भी सेना के ट्रकों का उपयोग आगे बढ़ने हेतु कर रहे थे।

महाराजा हरिसिह ने इस सेनापति को संदेश भेजा था कि किसी भी कीमत पर शत्रु को श्रीनगर नहीं पहुंचने देना है। सेनापति ने महाराजा को विश्वास दिलाया था कि आपके आर्शीवाद से मैं और मेरे साथी अपने खून की अंतिम बूंद तक राज्य की रक्षा करेंगे। उस समय निरंतर वर्षा हो रही थी तथा भीषण बर्फीली हवाएं चल रही थीं। परन्तु ये बहादुर आगे बढ़ रहे थे। 22 अक्तूबर को ही यह टुकड़ी रात होते–होते बारामुला पहुंच गयी। परन्तु उन्होंने वहां विश्राम नहीं किया। रात के अंधेरे में ही कुछ जवानों को बारामुला की सुरक्षा हेतु छोड़ कर आगे बढ़ गये। अब हमलावरों ने नई नीति अपनाई। उन्होंने अपने लोगों को पहाड़ियों के रास्ते डोगरा सेना के पीछे सड़क पर भेजना शुरू किया जिससे उसे बीच में घेरा जा सके। परन्तु सेना ने पूरे दो दिन तक हमलावरों को आगे न बढ़ने दिया। जब उन्हें दिखा कि अब तो शत्रु ने चारों ओर से घरोबंदी कर ली है तो उन्होंने लड़ते–लड़ते बारामुला की ओर हटने का आदेश अपने जवानों को दिया। उड़ी की तरफ बढ़ने का प्रयास भी विफल हआ यद्यपि इस सारे घटनाक्रम में दो दिन का समय और मिल गया।

अब किसी भी प्रकार बारामुला को बचाना था। इन वीरों ने शत्रु को यहां भी कई अमूल्य घंटो तक रोके रखा। बड़ी ही विपरीत परिस्थिति में शत्रु का सामना कर रहे थे। एक तो संख्या कम फिर ऊपर से गोला–बारूद भी समाप्त होता जा रहा था। सैनिक भूखे प्यासे व थक चुके थे। घायलों की मरहम पट्टी भी नहीं हो पा रही थी। आधे डोगरा सैनिक शहीद हो चुके थे। फिर भी शत्रु को रोके हुए थे। सेनापति अपने प्राणों की चिंता न कर हर मोर्चे पर जाकर देखभाल कर रहे थे व अपने सैनिकों का हौंसला बुलंद कर रहे थे। लड़ते–लड़ते सैनिकों को पीछे हटा रहे थे। तभी शत्रु की एक गोली उनके दायें कंधे पर लगी और दूसरी उसी ओर की टांग में जा घुसी। परन्तु सेनापति की बंदूक ने आग उगलना बंद न किया। रक्त निरंतर बह रहा था। हालत बिगड़ती जा रही थी। सैनिक उन्हें उठाकार सुरक्षित स्थान पर ले जाना चाहते थे, परन्तु सेनापति का आदेश था कि मेरी चिंता न करो, मुझे यही रहने दो, शत्रु को आगे बढ़ने से रोको।

अब सेनापति अपनी पिस्तौल थामकर पास की झाड़ी की आड़ में खिसक गये। शत्रु के आते ही उन्होंने अपनी पिस्तौल की सारी गोलियां खाली कर.दी। 6–7 हमलावरों को भून दिया और तब शत्रु की गोलियो से छलनी हुआ उनका शरीर निष्प्राण होकर गिर पड़ा। सचमुच उनके संकल्प के अनुसार ही शत्रु उनकी लाश पर ही आगे बढ़ सका। उनके सैनिकों ने भी इसी संकल्प को पूरा करते हुये अपने सेनापति का अनुगमन किया। शत्रु तभी आगे बढ़ सके जब एक–एक डोगरा सैनिक शहीद हो गये। ब्रि. राजेन्द्र सिंह और उनके मुठी भर सैनिकों की शहादत स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। ■■■

पंडित प्रेमनाथ डोगरा – एक महान राष्ट्रभक्त

मानव जन्म लेता है चला जाता है। बहुत कम ऐसे होते हैं जो अपने चिन्ह पीछे छोड़ जाते हैं जिनकी याद देर तक बनी रहती है। उनकी सोच तथा सिंद्धांत एक मार्गदर्शक का काम करते हैं। ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व पंडित प्रेमनाथ डोगरा थे। जीवन में ही नहीं उनके इस संसार से चले जाने के पंश्चात भी उनके मिशन को आगे बढ़ाने का संकल्प बार–बार दोहराया जा रहा है।

पंडित प्रेमनाथ डोगरा ने जम्मू–कश्मीर को भारत से जोड़ने और अलगाववाद की दीवारों को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय सोच के साथ क्षेत्रीय संगठन प्रजा परिषद को एक सुदृढ़ शक्ति के रूप में संगठित किया। देशव्यापी जागरूकता के साथ ही एक महान संघर्ष किया, भारी बलिदान दिए गए, हजारों लोगों ने तरह–तरह के अत्याचारों का सामना किया। 15 युवकों के बलिदानों के अतिरिक्त इसी आंदोलन में देश के महान नेता डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान हुआ। नारा और दृष्टिकोण स्पष्ट था : एक देश में दो विधान, दो प्रधान, दो निशान नहीं चलेंगे।

> **राजनीतिक जीवन में उनके बराबर शायद ही कोई होगा। कई सरकारी पदों पर बने रहने और एक लम्बे समय तक पहले प्रजासभा और फिर 15 वर्षों तक विधानसभा में विपक्ष का नेता रहने के पश्चात भी उन्होंने कोई धन दौलत एकत्र नहीं किया।**

पंडित डोगरा कई गुणों के मालिक थे :– पंडित प्रेमनाथ डोगरा आज के राजनीतिज्ञों से भिन्न थे, वह एक खिलाड़ी थे, बड़े समाज सुधारक थे, उत्तम प्रशासक थे। राजनीतिक जीवन में उनके बराबर शायद ही कोई होगा। कई सरकारी पदों पर बने रहने और एक लम्बे समय तक पहले प्रजासभा और फिर 15 वर्षों तक विधानसभा में विपक्ष का नेता रहने के पश्चात भी उन्होंने कोई धन दौलत एकत्र नहीं किया। उनकी निष्काम जन तथा देश सेवा की धारणा का अनुमान तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि वह अपनी छोटी सी आय का एक भाग संगठन के कार्यों पर ही लगा देते थे और उनका घर सामाजिक गतिविधियों का सदा केन्द्र बना रहा। पहले प्रजा परिषद, फिर भारतीय जनसंघ और अब प्रदेश भाजपा का प्रदेश मुख्यालय उसी भवन में है।

पंडित डोगरा कई सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध आंदोलित रहे जिनमें छुआछूत का अंत, शराब, मादक पदार्थों का सेवन तथा इस प्रकार की अन्य सामाजिक बुराईयां उनके संघर्ष का सदा अंग रहे।

धारा 370 का विरोध :–

भारत के संविधान के निर्माण के अवसर पर जब धारा 370 का प्रश्न उत्पन्न हुआ तो पंडित डोगरा ने इसका कड़ा विरोध किया और देश के कई बड़े नेताओं से मिलकर इस विशेष धारा के दुष्प्रभावों से उन्हें सूचित किया और देश के संविधान निर्माण सभा के कई बड़े नेताओ ने भी इस धारा का विरोध किया जिनमें मौलाना मोहानी, श्री कामत, श्री शिबन लाल सक्सेना तथा कई अन्य शामिल थे।

पंडित डोगरा का कहना था कि यह एक ऐसा प्रबंध है जिसकी विचारधारा उस दो राष्ट्रीय सोच से मिलती है जिसके आधार पर देश का दुःखदाई बंटवारा हुआ। पंडित डेगरा के इस अभियान का यह परिणाम निकला कि अंततः देश के प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू को यह जोर से कहना पड़ा कि धारा 370 एक अस्थाई पग है जो समय के साथ घिसते–घिसते घिस जायेगा। ■■■

पदमश्री डा. जितेन्द्र उधमपुरी

डा. जितेन्द्र उधमपुरी डोगरी, हिन्दी, उर्दु और पंजाबी साहित्य के जाने माने विभूतियों में गिने जाते हैं। वह एक लेखक, साहित्यकार व कई पुरस्कारों व सम्मानों से सम्मानित है। आकाशवाणी में उनका योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा, जहां वह वरिष्ठ निदेशक के पद पर सेवा निवृत हुए। उनके लिखे हुए डोगरी गीत, रूपक, वार्ताएं आज भी रेडियों जम्मू द्वारा प्रसारित होते हैं एवं अत्यन्त लोक प्रिय हैं। डोगरी भाषा की प्रगति में उनका योगदान अति सराहनीय रहा है। उनके इन्हीं प्रशंसनीय कार्यों के लिए राज्य, देश एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

डा. उधमपुरी का योगदान समाज के गरीब एवं पिछडे वर्ग के परिवारों के प्रति भी प्रशंसनीय रहा है। उन्होंने महाराष्ट्र भूकम्प पीडितों की सहायता हेतु "वह एक दिन" नामक नाटक को लिखा एवं निर्देशक किया। उनके द्वारा इस हेतु आई राशी प्रधानमंत्री सहायता कोष में चैक के रूप में भेजी गयी।

डा. जितेन्द्र उधमपुरी का जीवन अत्यन्त सादा रहा है। इतनी अधिक डिग्रियां पाकर एवं इतने अधिक सम्मान/पुरस्कार प्राप्त करने पर भी वह मधुर भाषी एवं सरल स्वभाव व्यक्तित्व के स्वामी है। वह सदा अंहकार से दूर रहे एवं अपनी मिटटी से जुड़े रहे। डा. साहिब को डुग्गर भाषा एवं अपनी डुग्गर धरती से अत्यन्त लगाव है, जिसकी सेवा हेतु वह अभी भी प्रयत्नशील है।

डा. उधमपुरी को कुछ वर्ष पहले पदमश्री अवार्ड से पुरस्करित किया गया। इससे पहले उन्हें साहित्य एकेडमी अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है।

डा. जितेन्द्र उधमपुरी का जीवन अत्यन्त सादा रहा है। इतनी अधिक डिग्रियां पाकर एवं इतने अधिक सम्मान/पुरस्कार प्राप्त करने पर भी वह मधुर भाषी एवं सरल स्वभाव व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वह सदा अंहकार से दूर रहे एवं अपनी मिटटी से जुड़े रहे। डा. साहिब को डुग्गर भाषा एवं अपनी डुग्गर धरती से अत्यन्त लगाव है, जिसकी सेवा हेतु वह अभी भी प्रयत्नशील है।

अभी हाल ही में राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने उन्हें उनकी साहित्यक उपलब्धियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार 2015 से सम्मानित किया। डा. जितेन्द्र उधमपुरी की इन्ही सेवाओं एवं उपलब्धियों के कारण उनकी जन्म भूमि एवं राज्य के निवासियों को गर्व है। ■■■

RPI REGD Rohini PRINTING INDUSTRIES
SSI UNIT (REGD.)
REGD. NO. 07/004/22/12882 DT. 11/06/2014

सभी देशवासियों को नव संवत् 2073 की हार्दिक शुभकामनायें

ROHINI PRINTING INDUSTRIES
MANUFACTURING & PRINTING OF: ALL TYPES OF LEDGER BOOKS, REGISTER, OFFICE STATIONERY & BOXES, FILE COVER ETC.
SPL. IN : ALL TYPES OF OFFSET PRINTING IN HINDI, ENGLISH & URDU.
REHARI COLONY, JAMMU-180005 Ph.: 0191-2570199, (M) 94191-87055
e-mail : rpindustries1@gmail.com

वेद प्रकाश चड्डा

हिन्द–पाक बंटवारे के समय कोटली नगर में श्री वेद प्रकाश चडडा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तहसील कार्यवाह का दायित्व निभा रहे थे। श्री वेद प्रकाश संघ के युवा कार्यकर्त्ताओं को साथ लेकर सेना से मिलकर नगर की सुरक्षा बड़े ही सुनियोजित ढंग से कर रहे थे। उस समय माननीय श्री केदार नाथ साहनी जिला प्रचारक का दायित्व निभा रहे थे और समय–समय पर सेना अधिकारियों व संघ के कार्यकर्त्ताओं से संपर्क कर नगर व वहां रहने वाले हिन्दुओं की सुरक्षा हेतु विचार–विमर्श कर आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान करते।

कोटली नगर पर शत्रु का घेरा कसता जा रहा था। पूरे क्षेत्र से हिन्दू आबादी, जहां–जहां अल्प संख्यक थी, सुरक्षा के लिए नगरों की ओर पलायन कर रही थी। दूर–दराज के इलाकों में मार–काट हो रही थी। इसी कारण कोटली में भी आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों से लगभग 8–10 हजार निवासी शरण ले चुके थे।

रियासती सेना के पास एमुनिशन समाप्त होने को जा रहा था। कर्नल बलदेव सिंह पठानिया जम्मू मुख्यालय में लगातार गोला बारूद्ध एवं औषधियां भेजने हेतु संदेश भेज रहे थे। सामान उतारने के लिए उन्होंने के.एफ.टी. चिन्ह का कोड भी दिया। यह संदेश शत्रु के पास भी पहुंच गया। जिस प्रकार सैनिकों ने सनातन धर्म सभा के सामने मैदान पर के.एफ.टी. का निशान लिखा, उसी प्रकार शत्रु ने भी ऐसा ही निशान दूर पेंग गांव के खुले मैदान में बना दिया। विमान चालक दो चिन्ह देखकर निर्णय न कर सका और बारूद की पेटियां दोनों चिन्हों के बीच उतार दीं, जो स्थान शत्रु की फायरिंग के अंदर आता था।

सेना ने सारी स्थिती की समीक्षा की। एमुनिशन लाना वहां से अति आवश्यक था। शत्रु की फायरिंग के बीच बारूद को वहां से उठा लाना मौत के मुंह में जाने से कम न था। सारी स्थिति को देखते हुए सेना के अधिकारियों ने संघ की सहायता लेनी उचित समझी।

स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए श्री वेद प्रकाश चड्डा ने इस जोखिम भरे कार्य के लिए स्वयं नेतृत्व करने का निश्चय किया और 20 के करीब सक्षम स्वयंसेवकों को साथ लेकर इस अभियान में कूद पड़े। सर्वप्रथम एक ट्रक को चारों ओर से तख्तों से बांध कर तैयार .केया गया परन्तु कुछ दूरी पर जाते ही शत्रु की गोलियों से ट्रक का टायर फट गया। मजबूरन ट्रक को वहीं छोड़ वापस आना पड़ा। श्री वेद प्रकाश चड्डा अपने कुछ कार्यकर्त्ताओं के साथ रेंगते हुए बारूद तक पहुंचने का प्रयास कर रहे थे। शत्रु की फायरिंग इनको बारूद की पेटियों तक पहुंचने में रोकने का प्रयास कर रही थी। शत्रु की फायरिंग आग उगल रही थी, वह मोर्टार बमों का प्रयोग भी कर रहा था। इस प्रकार दोनों ओर से गोली–बारी के बीच भी वेद प्रकाश चड्डा के नेतृत्व में साहसी वीर अपनी मंजिल की ओर लगातार बढ़ रहे थे। श्री वेद प्रकाश जब सिर उठा कर पेटियों की ओर देखने लगे तो शत्रु की एक गोली सनसनाती हुई उनके सिर से आर–पार हो गई। शत्रु के चंगुल से अधिकतर एमुनिशन लाने में सफलता तो मिल गई परन्तु इस अभियान में श्री वेद पकाश चड्डा व 5–6 साथियों का बलिदान देना पड़ा। वे सभी सपूत कोटली निवासियों की रक्षा हेतु अपनी जान दे अमर हो गये। तहसील कार्यवाह श्री वेद प्रकाश चड्डा का अपने देश व मातृभूमि के प्रति बलिदान होना एक अविस्मरणीय घटना है जो कि उनके नेतृत्व की क्षमता को भली भांति दर्शाती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए इनके नाम पर जम्मू के एक भाग को प्रकाश नगर का नाम दिया है जो उस वीर के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। ■■■

मेजर सोमनाथ शर्मा

आज कश्मीर का जो हिस्सा भारत के पास है, उसका श्रेय जिन वीरों को है, उनमें से मेजर सोमनाथ शर्मा का नाम अग्रणी है। 31 जनवरी, 1922 को ग्राम डाढ, जिला धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में मेजर जनरल अमरनाथ शर्मा के घर में सोमनाथ का जन्म हुआ। इनके गांव से कुछ दूरी पर ही प्रसिद्व तीर्थस्थल चामुण्डा नन्दिकेश्वर धाम है। सैनिक परिवार में जन्म लेने के कारण सोमनाथ शर्मा वीरता और बलिदान की कहानियां सुनकर बड़े हुए थे। देशप्रेम की भावना उनके खून की बूंद–बूंद में समायी थी।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा नैनीताल में हुई थी। इसके बाद इन्होंने प्रिन्स आर्फ़ वेल्स रायल इण्डियन मिलटरी कॉलिज, देहरादून से सैन्य प्रशिक्षण लिया। 22 फरवरी 1942 को इन्हें कुमाउं रेजिमेंट की चौथी बटालियन में सेकण्ड लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्ति मिली। इसी साल इन्हें डिप्टी असिस्टेंट क्वार्टर मास्टर जनरल बनाकर बर्मा के मोर्चे पर भेजा गया। वहां इन्होंने बड़े साहस और कुशलता से अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया।

15 अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्र होते ही देश का दुःखद विभाजन भी हो गया। जम्मू कश्मीर रियासत के राजा हरि सिंह असमंजस में थे। दो महीने इसी कशमकश में बीत गये। इसका लाभ उठाकर पाकिस्तानी सैनिक कबाइलियों के वेश में कश्मीर हड़पने के लिए टूट पडे।

वहां सक्रिय शेख अब्दुल्ला कश्मीर को अपनी जागीर बनाकर रखना चाहता था। रियासत के भारत में कानूनी विलय के बिना भारतीय शासन कुछ नहीं कर सकता था। जब राजा हरि सिंह ने जम्मू कश्मीर को पाकिस्तान के पंजे में जाते देखा, तब उन्होंने भारत के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये।

इसके साथ ही भारत सरकार के आदेश पर सेना सक्रिय हो गयी। मेजर सोमनाथ शर्मा की कम्पनी को श्रीनगर के पास बडगाम हवाई अडडे की सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गयी। वे केवल 100 सैनिकों की अपनी टुकड़ी के साथ वहा डट गये। दूसरी ओर सात सौ से भी अधिक पाकिस्तानी सैनिक जमा थे। उनके पास शस्त्रास्त्र भी अधिक थे; पर साहस के धनी मेजर सोमनाथ शर्मा ने हिम्मत नहीं हारी। उनका आत्मविश्वास अटूट था। उन्होंने अपने मुख्यालय पर समाचार भेजा कि जब तक मेरे शरीर में एक बूंद खून और मेरे पास एक भी जवान शेष है, तब तक मैं लड़ता रहूंगा।

दोनों ओर से लगातार गोलीबारी हो रही थी। कम सैनिकों और गोला बारूद के बाद भी मेजर की टुकड़ी हमलावरों पर भारी पड रही थी। 3 नवम्बर, 1947 को शत्रुओं का सामना करते हुए एक हथगोला मेजर सोमनाथ के समीप आ गिरा उनका सारा शरीर छलनी हो गया। खून के फव्वारे छूटने लगे। इस पर भी मेजर ने अपने सैनिकों को सन्देश दिया–इस समय मेरी चिन्ता मत करो। हवाई अडडे की रक्षा करो। दुश्मनों के कदम आगे नहीं बढने चाहिए..........।

उनके बलिदान से सैनिकों का खून खौल गया। उन्होंने तेजी से हमला बोलकर शत्रुओं को मार भगाया। यदि वह हवाई अडडा हाथ से चला जाता, तो पूरा कश्मीर आज पाकिस्तान के कब्जे में होता। मेजर सोमनाथ शर्मा को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। शौर्य और वीरता के इस अलंकरण के वे स्वतंत्र भारत में प्रथम विजेता हैं। ■■■

ललद्यद

चौदहवीं शती की संत कवयित्री ललद्यद का जन्म श्रीनगर के निकट पांद्रेन्ठन या शायद सिंहपुर गांव में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके जन्म एवं देहावसान की तिथियों के बारे में यह निश्चित रूप से कह पाना कठिन है फिर भी इतना तय है कि उनका जन्म 1318 ई से 1348 ई तक कभी भी और मृत्यु सम्भवतः सुलतान कुतुबदीन के समय (1373 ई – 1389 ई) में हुई थी। विवाह बचपन में ही पाम्पुर में हुआ, जो केसर की खेती के लिए प्रसिद्ध है, पर विवाहित जीवन, जनश्रुतियों के अनुसार एक व्यथा मात्र रहा। ललद्यद पर सास और पति के अत्याचारों से संबंधित अनेक कथाएं प्रचलित हैं।

संवेदनशील मन जब अधिक न झेल सका तो ललद्यद घर छोड़कर विरागिनी हो गयी। गुरु मिले सिद्ध श्री कंठ जो महान शैव दार्शिनिक वसुगुप्त की शिष्य परंपरा में थे और स्वयं भी अपने समय के प्रख्यात विद्वान थे। उनसे शैव दर्शन और साधना की दीक्षा लेकर ललद्यद सामाजिक मर्यादाओं और विधि निषेधों की उपेक्षा करती हुई गांव–गांव, गली–गली, घूमने लगी। अपने पद सुनाती रहीं। वैराग्य ने ललद्यद को गृहस्थी से संन्यासी बना दिया। उन्होंने न केवल अपनी वाणी से कश्मीर के लोक जीवन को प्रभावित किया बल्कि शैव मत की आधार स्तंभ भी बनीं। उन्होंने शैव दर्शन, रहस्यवाद तथा सामाजिक चेतना को अपने काव्य का स्वर बनाया। उन्होंने जो पद कहे, उन्हें [illegible] कहा जाता है। अपनी काव्य प्रतिमा गहन चिंतन बोध और विरक्त मन के द्वारा ललेश्वरी ने शैव दर्शन को व्याख्यादित कर इसे जीवन जीने का दर्शन बनाया। ■■■

गुरु गोविन्दसिंह जी का 350वाँ जन्म वर्ष

यह वर्ष दशमेशपिता श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के 350 वें प्रकाश पर्व का वर्ष है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के विराट व्यक्तित्व और उनके संदेश का पुण्य स्मरण करते हुए, उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन् करता है। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी केवल सिक्ख पंथ के ही गुरु नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत में राष्ट्रीय चेतना की जागृति व उसके सुदृढ़ीकरण के वाहक हैं। देश–धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने खालसा की स्थापना की तथा उस हेतु अपने पूरे वंश को न्यौछावर कर दिया।

उन्होंने इस सोए हुए समाज में देश–धर्म के प्रति निष्ठा व समर्पण का भाव जगाकर तत्कालीन समाज में व्याप्त भय एवं उदासीनता को दूर कर शौर्य एवं भक्ति के भाव से ओत–प्रोत किया। उस समय के अत्यन्त कठिन काल में क्रूर और असहिष्णु सत्ता के विरुद्ध धर्म की रक्षा के लिये समाज को एक जुट कर जिस प्रकार वीरवृत्ति के साथ खड़ा कर दिया वह अभूतपूर्व ही था। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर बंद–बंद कटवाने वाले वीर बंदा सिंह बहादुर, भाई मनीसिंह, जस्सासिंह आहलुवालिया व जस्सासिंह रामगढ़िया, नबाव कपूर सिंह जैसे अनगिनत आत्म–बलिदानी शूरवीर तैयार हुए जिन्होंने विदेशी आक्रांताओं का मार्ग सदैव के लिए बंद कर दिया। समाज में देश धर्म की रक्षा का ऐसा भाव जगा कि विधर्मियों द्वारा माताओं की गोद से छोटे–छोटे बच्चों को छीनकर उनके शरीर के टुकड़े–टुकड़े करके गले में हार बना कर डालने पर भी माताओं ने धर्म छोड़ने से इन्कार कर दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वयंसेवकों सहित समस्त भारतवासियों का आवाहन करता है कि श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज के सर्वस्व बलिदानी जीवन एवं उनके द्वारा समाज में उत्पन्न किये गये शौर्य, बलिदान, सेवा एवं भक्ति के श्रेष्ठ भाव को घर–घर तक पहुँचायें जिससे राष्ट्र जीवन में उत्साह एवं विश्वास का संचार हो सके। ■■■

महाकवि अवतार

अवतार ने ईश्वरशतक को 113 श्लोकों में लिखा है। इन श्लोकों में विभिन्न प्रकार के छन्दों एवं बन्धों का प्रयोग भी किया गया है जैसे धर्नुबन्धा, मुसलबन्धा, खड्‌गबन्ध, त्रिशूलबन्ध, शरबन्ध, पदबन्ध, हलबन्धा इत्यादि। यह ईश्वरशतक काव्यमाला गुच्छक न. 9 में संगृहीत है, और इसके प्रथम श्लोक में ही शिव की स्तुति की गई है।

ईश्वरशतक नामक मुक्तक काव्य के रचयिता अवतार कश्मीर निवासी हैं। यह ब्राह्मण कुल में पैदा हुए थे। महाकवि अवतार के दादा का नाम भी अवतार था। यह बात राजनक रत्नकण्ठ द्वारा लिखित ''स्तुति–कुसुमांज्जली'' के अंतिम श्लोक से स्पष्ट होती है।

संकलविपश्चिद्‌बर्यः प्रज्ञाजितबृझहामात्यः।
अवतारोर्ज्जान नस्मात्पांडित्यस्यावतार ।।

महाकवि अवतार के समय के बारे में पूरा–पूरा पता अभी तक किसी को नहीं चला है। स्तुति कुसुमांज्जलि 17 वीं शताब्दी में लिखा गया है, इसके समय के अनुसार अवतार नामक महाकवि का समय इससे पचास वर्ष पहले माना गया है अर्थात इन्हें 16वीं शताब्दी के उतरार्ध का माना जाता है।

इसकी बहुत अधिक सम्भावना है कि ''स्तुति कुसुमांज्जली'' की काव्यमाला गुॅच्छक नं.–9 में संगृहीत दो हस्तलेख, जो प्रतिपाद्य विषय और आकार में समान है, वे इसी अवतार नामक एक ही लेखक द्वारा लिखे गये होंगे। इसका विस्तृत वर्णन डा. के. सी. नागराजन ने अपने ग्रन्थ ''कंट्रीब्यूशन आफ कश्मीर टू संस्कृत लिटरेचर'' में किया है। इन दोनों हस्तलेखों को देखने पर इनमें से एक देवनागरी लिपि में लिखा हुआ पाया गया है और ज्यादा पुराना नहीं है। कविता अध्ययन के योग्य एवं आनंददायक है।

अवतार ने ईश्वरशतक को 113 श्लोकों में लिखा है। इन श्लोकों में विभिन्न प्रकार के छन्दों एवं बन्धों का प्रयोग भी किया गया है जैसे धर्नुबन्ध, मुसलबन्ध, खड्‌गबन्ध, त्रिशूलबन्ध, शरबन्ध, पदबन्ध, हलबन्ध इत्यादि। यह ईश्वरशतक काव्यमाला गुच्छक न. 9 में संगृहीत है, और इसके प्रथम श्लोक में ही शिव की स्तुति की गई है।

ओं स वः पायोथेन निन्ये वासुकि र्निजहारताम्।
नयोज्यायत्तनुं कोपादयः समरस्य जहारताम्।।
''इतिश्री महाकाव्यवतार कृतमीश्वरशतंक सटीक समाप्तम्''

इनकी काव्य रचना को पढ़कर ऐसा अनुभव होता है कि इनमें पाण्डित्य प्रदर्शन की लालसा का अभाव है। अपने इस काव्य में इन्होंने भक्तिरस को प्रधानता दी है। गौडीं रिनी का प्रयोग भी कहीं–कहीं किया गया है और किसी –किसी श्लोक में प्रसाद गुण भी दृष्टिगोचर होता है।

अलंकारों की छटा भी दर्शनीय है। महाकवि अवतार ने ईश्वर शतक के रूप में एक छन्दोबद्ध रचना की है।

महाकवि अवतार की मातृभाषा कश्मीरी है। परन्तु इसके साथ–साथ इनको अपभ्रश, प्राकृत एवं संस्कृत का भी सम्यक् ज्ञान था। ■■■

–डा विजयलक्ष्मी

कैप्टन राम प्रकाश

जुलाहका मौहल्ला जम्मू में श्री अमृत राय दत्ता एवं श्रीमती कृष्णा कांता के घर 12 दिसम्बर 1911 को एक होनहार बालक का जन्म हुआ जिसका नाम राम प्रकाश रखा गया। रणवीर हाई स्कूल एवं प्रिंस ऑफ वेल्ज (वर्तमान जी जी एम साइंस) कालेज जम्मू से शिक्षा प्राप्त कर राज्य सेना में सैकेण्ड लैफटीनेंट के पद पर कमीशन प्राप्त किया। 1943 में जे एण्ड के लाईट इन्फेंटरी में कम्पनी कमांडर के पद पर आसीन हुए। बंटवारे के समय इन्हें कोटली (जिला मीरपुर) नियुक्त किया गया, जहां इन्होंने अपने शौर्य का बखूबी परिचय दिया। कोटली नगर में दाखिल होने के हर रास्ते पर दरवाजा था, जिन्हें बंद करने पर शहर में कोई आसानी से दाखिल नहीं हो सकता था। कैप्टन राम प्रकाश स्वयं सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ नगर की सुरक्षा कर रहे थे। 15 नवम्बर 1947 रात्रि के 12 बजे कुछ कबायली रेंगते हुए ऊपरी दरवाजे की ओर बढ़े और उसे तोड़ने का प्रयास करने लगे। जब वह अपनी योजना में सफल न हुए तो 4–5 पठान दरवाजे के ऊपर चढ़कर नगर के अंदर दाखिल हो गये। शत्रु ने अंदर दाखिल होते ही आग लगाना शुरू कर दिया और ग्रेनेड फेंकने लगे।

कैप्टन राम प्रकाश ने सारी स्थिति की समीक्षा की और अपनी सैन्य टुकड़ी लेकर शत्रु की तलाश हेतु मैदान में कूद पड़े। शत्रु में उनके नाम का इतना डर था कि उनका नाम सुनते ही भाग उठते। जब आमना–सामना होने पर कबायलियों ने पूछा, ''तुम कौन''? कैप्टन ने उत्तर दिया, ''मैं कैप्टन राम प्रकाश''। इस पर उन्होंने कहा कि ''भागो कैप्टन राम प्रकाश आ गया है।'' वह उनका नाम सुनते ही भागने लगे। कबायली नेता शेर खान गोली लगने से मारा गया, जिस कारण उसके साथियों का हौंसला और भी पस्त हो गया और नगर से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढने लगे। कैप्टन राम प्रकाश ने वहां पहुंच कर अपने साथियों व संघ के स्वयंसेवकों की सहायता से बलवाईयों को मार गिराया, जिसके फलस्वरूप कोटली नगर भीषण मार काट व अपूर्व सम्भावित हानि से बच गया।

एक और घटना में जब असुरक्षा की स्थिति देख कोटली नगर की साध्वी माता भागवंती जी ने सब स्त्रियों को इक्टठा कर विष की पुड़िया वितरण कर उन्हें रानी पद्मिनी की याद दिलाते हुए कहा कि '' यह विष खाकर मर जाना पर यदि कोई ऐसे हालात आ जाएं तो अपनी लाज मत खोना, क्योंकि संसार में सतीत्व की रक्षा से बढ़कर और कोई चीज नहीं है।''उनके इस उपदेश का अच्छा प्रभाव दिखाई दिया। परन्तु सहसा कैप्टन राम प्रकाश वहां आ पहुंचे और बोले, '' माता जी, अभी विष बांटने का समय नहीं आया है, क्योंकि अभी राम प्रकाश जिन्दा है और उसके रहते कोई इन सबका बाल बांका नहीं कर सकता।'' इस पर सबका मनोबल बढ़ गया और नगर एक बड़ी सम्भावित जान–हानि से बच गया।

कैप्टन राम प्रकाश रियासती सेना के एक निडर, कर्मठ और साहसी सैनिकों में से एक थे जो दिन रात अपने कार्य में संलग्न रहते। सदा दोनों हाथों में पिस्तोल रखते। वह कहा करते थे कि ''वह गोली अभी नहीं बनी जो उन्हें लग सके।'' यदि कोटली नगर की सुरक्षा व्यवस्था कैप्टन राम प्रकाश के हाथ न होती तो वहां की स्थिति भी मीरपुर, पलन्दरी, राजौरी नगरों जैसी हुई होती। बंटवारे के उपरांत इन्हें फिरोजपुर नियुक्त किया गया जहां हुसैनी वाला बार्डर पर पाकिस्तानी हमले को पस्त कर सेना मैडल, वीरता पुरस्कार प्राप्त कर अपनी इन्फैंटरी का नाम रोशन किया। देश को इन महान सपूतों पर सदा ही गर्व रहेगा। ■■■

विक्रमी नववर्ष 2073 की मंगलकामनायें

N.S.M. GROUP OF COLLEGES & SCHOOLS

H.O. ANAND NAGAR, BOHRI, JAMMU. PH. 9419184067, 9858084067

N.S.M. COLLEGE OF EDUCATION

Recognised & Affiliated to University of Jammu

ANAND NAGAR, BOHRI, JAMMU. PH. 0191-2502394, 2552023

N.S.M. COLLEGE OF ETT

ANAND NAGAR, BOHRI, JAMMU. PH. 9419184067, 9858084067

S.M. SHISHU NIKETAN HIGHER SEC. SCHOOL

OPP. J&K BANK, ANAND NAGAR, BOHRI, JAMMU. PH. 2100425, 2502394, 7298500053

KIDZEE

❖ PLAYGROUP ❖ NURSERY ❖ JR.KG ❖ SR. KG.

- ❖ OPP. J&K BANK, ANAND NAGAR, BOHRI, JAMMU. PH. 2100425, 2502394, 7298500053
- ❖ 16- B EXTN., GANDHI NAGAR, JAMMU. PH. 2430031, 2100430
- ❖ NEAR GOLE PULLI, TALAB TILLO, JAMMU. PH. 2100426, 2554807, 7298500054
- ❖ OPP. PANJ MANDIR, SEC. 2, CHANNI HIMMAT, JAMMU. PH. 2467502, 2100431
- ❖ SECTOR-2, NEAR SHIV MANDIR, TRIKUTA NAGAR, JAMMU. PH. 9419184067

Daily THE PERENNIAL TIMES

H.O. : F-66, LANE NO.6, SURAJ NAGAR, TALAB TILLO, JAMMU.

V.S.B. PAPER INDUSTRY

ANAND NAGAR, BOHRI, JAMMU. PH. 9419184067, 9858084067
(Manufacturers of Quality Notebooks, Registers, File Covers, File Flaps etc).

PARNEESH MAHAJAN
CHAIRMAN

शिव कुमार शर्मा
एवं
परिवार की ओर से
सभी देशवासियों को
युगाब्द 5118
नवरात्रे
तथा
बैसाखी की
हार्दिक शुभकामनायें

नव संवत्सर 2073 की हार्दिक शुभ कामनायें

(राजेश गुप्ता)
भाजपा विधायक
जम्मू पूर्व

चिनार वायर

फेज 3, इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गंग्याल जम्मू

फोन : 0191-2480706 मो. 9419118360

SHAKTI™
TMT SARIA
A mark of quality

An ISO 9001:2008 Certified Company
आपके भरासे की पहचान
शक्ति टी० एम० टी०
सरिया

We Make
SHAKTI
TMT BARS
From
BILLETS only

SHAKTI
TMT SARIA

की ओर से सभी देशवासियों को
नव संवत्सर २०७३
की हार्दिक शुभकामनायें

- HIGH STRENGTH
- HIGH ELONGATION
- HIGH WELDABILITY
- EARTHQUAKE & FIRE RESISTANT

KASHMIR ISPAT

Jammu Office : 01923-220178, 220887, Fax : 01923-220205 Mob : +91 9419203311
Srinagar Office : 2476494 Web : www.kashmirispat.com

RNI No. JKHIN/2005/24338

Postal Regd. No. JK-314/16-18

Abhay Pargal
Mob. : 9419193995
(Chief Group Editor-Cum
Business Head J&K Zee Salaam)

सभी देशवासियों को नव संवत्सर २०७३ की हार्दिक शुभकामनायें

ZEE
ENTERTAINMENT

VASUDHAIVA KUTUMBAKAM
THE WORLD IS MY FAMILY

Plot No. 6, Phase-2, Opp. Sicop Office, Gangyal, Jammu.
Ph. : 0191-2480711

BUSINESS POST CENTRE
POSTAGE PAID
22 APR 2016
JAMMU RMS 180012

छपी पुस्तक

द्वारा : त्रिकुटा संकल्प
कार्यालय : कमरा नं. 12, गीता भवन,
परेड ग्राऊंड, जम्मू-180 001.
दूरभाष : 0191-2565483, 94197-03135
E-mail : trikutasankalp@gmail.com

सेवा में

Balniketan Ved mandir
Complex Ambphala
Jammu 180001

स्वामी एवं प्रकाशक त्रिकुटा संवाद केन्द्र द्वारा प्रकाशित, रोहिणी प्रिंटिंग इण्डस्ट्रीज़ जम्मू द्वारा मुद्रित, कमरा नं. 12, गीता भवन जम्मू से प्रकाशित। संपादक-देवेन्द्र कुमार